साान्ध्य हिन्दी दैनिक

जौनपुर से प्रकाशित

देश की उपासना

देश के विकास में समर्पित समाज के सभी वर्गों के लिए

वर्ष - 03 | अंक - 106 | जौनपुर, शुक्रवार, 06 दिसम्बर 2024 | सान्ध्य दैनिक (संस्करण) | पेज - 4 | मूल्य - 2 रूपये

देश है तो धर्म है, धर्म है तो हम सब हैं : सीएम योगी

लखनऊ, संवाददाता। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि सामर्थ्य के अनुसार देश व धर्म के लिए कुछ करने के साथ ही समाज और हर एक को जोड़ने की आवश्यकता है। देश है तो धर्म है, धर्म है तो हम सब हैं। हमारा ध्येय सनातन धर्म की रक्षा और भारत को विकास के परम वैभव तक पहुंचाने का होना चाहिए। सीएम योगी ने जाति के नाम पर बांटने वालों से बचने का आह्वान किया। मुख्यमंत्री योगी गुरुवार को जानकी महल में आयोजित श्री राम जानकी विवाह उत्सव में शामिल हुए। उन्होंने कहा कि इसी प्रकार का भव्य आयोजन आज जनकपुर धाम में भी हो रहा है। छह वर्ष पूर्व केंद्र व यूपी सरकार के योजनान्तर्गत विवाह पंचमी पर जनकपुर धाम में जाने और मां जानकी के भव्य मंदिर के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। आज जानकी महल में विवाह पंचमी कार्यक्रम में फिर से जुड़ने का अवसर प्राप्त हो रहा है। सीएम योगी ने कहा कि श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन के दौरान इसे नई ऊंचाई तक पहुंचाने में यह महत्वपूर्ण केंद्र बिंदु था। मेरे पूज्य गुरुदेव महंत अवैद्यनाथ जी महाराज राम जन्मभूमि आंदोलन से संबंधित किसी महत्वपूर्ण बैठक या आंदोलन के लिए आते थे तो अक्सर वे रात्रि विश्राम जानकी महल में ही करते थे। यह अनेक पूज्य संतों व आयोजनों का केंद्र बिंदु रहा है। सीएम योगी ने कहा कि यह वर्ष बहुत महत्वपूर्ण रहा, जब 22 जनवरी को पीएम नरेंद्र मोदी के करकमलों से अयोध्या धाम में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामलला के रूप में विराजमान हो चुके हैं। भारत ही नहीं, बल्कि दुनिया में कोई भी ऐसा सनातन धर्मावलंबी नहीं था, जो उस क्षण से वंचित हुआ हो। कोई यहां उपस्थित हुआ तो किसी ने श्रव्य–दृश्य माध्यम से उस पल को देखा–सुना। 500 वर्ष तक चले संघर्षों का सामना करते–करते कई पीढ़ियां चली गईं, लेकिन यह सौभाग्य हमारे भाग्य में था कि फिर से भव्य मंदिर में रामलला को विराजमान होते हमने देखा है। 22 जनवरी को हर सनातन धर्मावलंबी उत्साहित और पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर रहा था। सीएम योगी ने कहा कि 2017 के पहले की अयोध्या में बमुश्किल चार से पांच घंटे बिजली मिलती थी। यहां साफ–सफाई की उचित व्यवस्था नहीं थी। राम की पैड़ी में सरयू जी का जल सड़ता था। लोग उसी में स्नान कर पाते थे। एयर, रेल, सड़क कनेक्टिविटी अच्छी नहीं थी। अब तो न केवल सड़क, बल्कि रेल व वायु मार्ग से अयोध्या का अच्छा जुड़ाव हो चुका है। जल मार्ग पर भी हमारा सर्वे का कार्य चल रहा है। व्यवसाय और प्रोडक्ट को दुनिया के मार्केट तक पहुंचाने के लिए जल मार्ग आसान हो सकता है। संकरी गलियां चौड़ी हो रही हैं। अब राम की पैड़ी स्वच्छ हो गई है। हर स्तर पर विकास कार्य निरंतर बढ़ते दिख रहे हैं। उन्होंने कहा कि श्रीराम ने महाराजा दशरथ से कहा कि आपका वचन मेरी प्रतिज्ञा है। अपने लिए नहीं, बल्कि सनातन धर्म व देश के लिए जो अच्छा है, वह करूंगा। श्रीराम ने 14 वर्ष का वनवास स्वीकार किया। उन्होंने निषादराज को गले से लगाया, चित्रकूट में कोल, वनवासी, गिरवासी से जुड़े। 12 वर्ष चित्रकूट में रहे, भारत के ज्ञान और विरासत के प्रतिनिधि होने के कारण ऋषि–मुनियों को अभय प्रदान किया। उस समय दंडकारण्य को राक्षस विहीन किया। उन्होंने रामेश्वर में ज्योतिर्लिंग की स्थापना की। आज भी हम रामेश्वर में दर्शन करते हैं। उन्होंने सेतुबंध का निर्माण किया और धरती मां को राक्षस विहीन किया। सीएम योगी ने कहा कि 14 वर्ष बाद अयोध्या आने से पहले श्रीराम ने हनुमान जी को भेजा कि जाओ, देखो– ऐसा तो नहीं कि भरत को राज्य का मोह हो गया हो, यदि वह राजा रहना चाहते हों, तो मैं अयोध्या वापस नहीं जाऊंगा। हनुमान जी ने देखा कि संन्यासी के रूप में भरत श्री राम जी का इंतजार कर रहे हैं। यह बातें हनुमान जी ने श्रीराम को बताईं, तब भगवान राम ने आकर प्रजा की भावनाओं का सम्मान करते हुए जिस व्यवस्था को आगे बढ़ाया, वह रामराज्य की आदर्श व्यवस्था थी। कहीं दरिद्रता–अव्यवस्था नहीं थी, हर जगह खुशहाली थी।

सदन के नियम एवं प्रक्रियाओं का पालन करें सदस्य, बिल्ले लगाकर न आएं – बिरला

नई दिल्ली, एजेसी। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने बृहस्पतिवार को सदस्यों से नियम एवं प्रक्रियाओं का पालन करने और सदन में बिल्ले आदि लगाकर नहीं आने का आग्रह किया। उनकी इस अपील को कांग्रेस के कुछ सदस्यों द्वारा काले रंग की जैकेट पहनकर सदन में आने की पृष्ठभूमि में देखा जा रहा है जिसके पीछे 'मोदी अदाणी एक हैं, अदाणी सेफ हैं' लिखा हुआ था। इससे पहले कांग्रेस समेत 'इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस' (इंडिया) के घटक दलों के सदस्यों ने संसद के 'मकर द्वार' के पास इस मुद्दे पर विरोध ा प्रदर्शन किया। अध्यक्ष बिरला ने कहा, ''मैं आप सभी से संसद की मर्यादा, गरिमा और प्रक्रियाओं का पालन करने का आग्रह करता हूं। उन्होंने कहा कि लोकसभा की प्रक्रिया तथा कार्य–संचालन नियमावली के नियम–349 के तहत कोई भी सदस्य सभा में लैपल पिन अथवा बिल्ला (राष्ट्रीय ध्वज के सिवाय) लगाकर नहीं आएंगे और प्रदर्शित नहीं करेंगे। बिरला ने कहा, ''मेरा आपसे आग्रह है कि संसद के नियम प्रक्रियाओं का पालन करें।

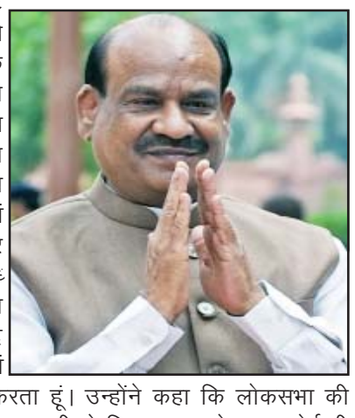

सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली–एनसीआर में ग्रैप–4 हटाने की दी इजाजत

नई दिल्ली, एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को दिल्ली में गंभीर वायु गुणवत्ता से निपटने के लिए वर्तमान में लागू ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (जीआरएपी) उपायों के चरण 4 में छूट की अनुमति दी। यह घटनाक्रम राष्ट्रीय राजधानी में वायु प्रदूषण से निपटने के लिए जीआरएपी के चरण 4 के तहत आपातकालीन उपायों में ढील देने से शीर्ष अदालत के इनकार के दो दिन बाद आया है, जब तक कि एक्यूआई स्तर में लगातार गिरावट की प्रवृत्ति नहीं देखी गई। न्यायमूर्ति अभय एस ओका और ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह ने एनसीआर राज्यों के मुख्य सचिवों को 5 दिसंबर को वीडियो–कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से पेश होने का निर्देश दिया ताकि यह बताया जा सके कि प्रतिबंधों के कारण बिना काम के गए निर्माण श्रमिकों को कोई निर्वाह भत्ता दिया गया था या नहीं। सुप्रीम कोर्ट की छूट के साथ, सरकार कुछ गतिविधियों से प्रतिबंध हटाने पर अगले कुछ घंटों में फैसला करेगी। सरकार ट्रक प्रवेश पर प्रतिबंध और सार्वजनिक परियोजनाओं पर निर्माण पर अस्थायी रोक हटा सकती है। अधिकारी स्कूलों और कॉलेजों में शारीरिक कक्षाओं की भी अनुमति दे सकते हैं। इस बीच, दिल्ली ने 50 दिनों के अंतराल के बाद बुधवार को स्वच्छ हवा में सांस ली, क्योंकि हवा की गुणवत्ता मध्यम श्रेणी में दर्ज की गई, जिससे प्रदूषण के उच्च स्तर से काफी राहत मिली। शहर का 24 घंटे का औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) शाम 4 बजे 178 दर्ज किया गया, ।

गति वही है, केवल हमारी भूमिकाएं बदल गई - मुख्यमंत्री फडणवीस

महाराष्ट, एजेंसी। भाजपा नेता देवेन्द्र फडणवीस ने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। पांच साल बाद मुख्यमंत्री के रूप में फडणवीस की वापसी पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आजाद मैदान में समारोह में शामिल हुए। वहीं, एकनाथ शिंदे और अजित पवार ने महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री पद की शपथ ली। शपथ लेने के बाद महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस के साथ उनके उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और अजित पवार ने मंत्रालय में छत्रपति शिवाजी महाराज और डॉ. बीआर अंबेडकर को पुष्पांजलि अर्पित की। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेने के बाद देवेंद्र फडणवीस ने पुणे के मरीज चंद्रकांत शंकर कुरहाडे को अस्थि मज्जा प्रत्यारोपण उपचार के लिए मुख्यमंत्री चिकित्सा राहत कोष से 5 लाख रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान करने के लिए हस्ताक्षर किए। वहीं, महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री और शिवसेना प्रमुख एकनाथ शिंदे ने कोलाबा में शिवसेना के संस्थापक बालासाहेब ठाकरे की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। इन तमाम प्रक्रियाओं के बाद फडणवीस ने अपनी पहली प्रेस कॉन्फ्रेंस की। फडणवीस ने कहा कि पिछले 2. 5 साल में हमने महाराष्ट्र के विकास के लिए काम किया है

और यहां से भी हम महाराष्ट्र के विकास के लिए काम करेंगे और हम अब नहीं रुकेंगे, दिशा और गति वही है, बस हमारी भूमिकाएं बदल गई हैं। उन्होंने कहा कि हम महाराष्ट्र की भलाई के लिए फैसले लेंगे। हम उन कार्यों को पूरा करना चाहते हैं जिनका उल्लेख हमने अपने घोषणा पत्र में किया है। शपथ ग्रहण के बाद राज्य कैबिनेट की पहली बैठक में देवेंद्र फड़नवीस ने प्रशासन को और अधिक तेजी और जोश के साथ काम करने का निर्देश दिया। बैठक के दौरान उन्होंने कहा कि आइए अब गति बढ़ाएं और गहराई तक जाकर और अच्छे निर्णय लेकर सतत विकास कैसे हासिल किया जाए, इस दृष्टिकोण से काम करें। फडणवीस ने कहा कि महाराष्ट्र सामाजिक, बुनियादी ढांचे, औद्योगिक क्षेत्रों में तेजी से विकास के पथ पर आगे बढ़ता रहेगा। उन्होंने कहा कि मैं नहीं मानता कि (सरकार बनाने में) ऐसी कोई देरी हुई है। इससे पहले भी 2004 में करीब 12–13 दिन की देरी हुई थी। 2009 में करीब 9 दिन की देरी हुई थी। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमें यह समझना होगा कि जब गठबंधन सरकार होती है तो कई फैसले लेने पड़ते हैं। गठबंधन सरकार में परामर्श बहुत बड़े पैमाने पर करना पड़ता है। हमने वह परामर्श कर लिया है और हमने पोर्टफोलियो को भी लगभग अंतिम रूप दे दिया है, कुछ बाकी है, हम वह भी करेंगे। उन्होंने कहा कि एकनाथ शिंदे और अजित पवार मेरे साथ हैं। लोग एक स्थिर सरकार चाहते हैं, इसलिए उन्होंने हमें चुना है और हम साथ रहेंगे और काम करेंगे।श हम श्माझी लड़की बहिन योजनाश जारी रखेंगे। हम जल्द ही महाराष्ट्र विधानसभा अध्यक्ष का चुनाव करेंगे क्योंकि कैबिनेट ने 7–8 दिसंबर को एक विशेष सत्र आयोजित करने का फैसला किया है। 9 दिसंबर को राज्यपाल का अभिभाषण होगा।

दिल्ली सरकार 15,000 और होमगार्ड की भर्ती करेगी - उपराज्यपाल

नई दिल्ली, एजेसी। दिल्ली सरकार 15,000 और होमगार्ड की भर्ती करेगी, जिससे इनकी कुल संख्या 25,000 हो जाएगी। बुधवार को जारी किए गए एक आधिकारिक बयान में यह जानकारी दी गई। राज निवास से जारी बयान में कहा गया कि दिल्ली के उपराज्यपाल वी.के. सक्सेना ने 10,000 में से 1669 होमगार्ड को मंगलवार को नामांकन पत्र वितरित किए। जनवरी में होमगार्ड की भर्ती प्रक्रिया शुरू हो गई थी। उपराज्यपाल ने एक कार्यक्रम में नवनियुक्त होमगार्ड को संबोधित करते हुए कहा कि 15,000 अतिरिक्त होमगार्ड की भर्ती की जाएगी,

असम में 7 दिसंबर को होगा कैबिनेट विस्तार, चार नए मंत्री होंगे शामिल

असम, एजेंसी। असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने गुरुवार (5 दिसंबर) को कहा कि कैबिनेट 7 दिसंबर को चार मंत्रियों को शामिल करके होगी। विस्तार से मंत्रिपरिषद में सदस्यों की कुल संख्या 20 हो जायेगी। परिषद के सभी सदस्य भाजपा विधायक हैं। मुख्यमंत्री के नेतृत्व वाले वर्तमान मंत्रिमंडल में 16 सदस्यीय मंत्रिपरिषद शामिल है। मुख्यमंत्री सरमा ने कहा कि विधायकों को 7 दिसंबर को दोपहर 12 बजे कैबिनेट में मंत्री पद की शपथ दिलाई जाएगी। हिमंत बिस्वा सरमा ने एक्स पर लिखा कि यह बताते हुए खुशी हो रही है कि निम्नलिखित सहयोगी 7 दिसंबर को दोपहर 12 बजे हमारे मंत्रिमंडल में मंत्री के रूप में शपथ लेंगे। 1. श्री प्रशांत फूकन, विधायक 2. श्री कौशिक राय, विधायक 3. श्री कृष्णेंदु पॉल, विधायक 4. श्री रूपेश गोला, विधायक। उनमें से प्रत्येक को मेरी शुभकामनाएँ! इससे पहले असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने बुधवार को घोषणा की कि राज्य सरकार ने रेस्तराओं, होटलों एवं सार्वजनिक स्थलों पर गोमांस परोसे जाने और खाने पर रोक लगाने का फैसला किया है। राज्य मंत्रिमंडल की बैठक में गोमांस सेवन पर मौजूदा कानून में संशोधन कर नए प्रावधानों को शामिल करने का निर्णय लिया गया। शर्मा ने यहां संवाददाता सम्मेलन में कहा, ''हमने रेस्तराओं, होटलों एवं सार्वजनिक स्थलों पर गोमांस परोसे जाने तथा खाने पर रोक लगाने का फैसला किया है।

प्रधानमंत्री मोदी ने नगालैंड के लोगों को हार्नबिल महोत्सव की बधाई दी

नई दिल्ली, एजेसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बृहस्पतिवार को नगालैंड के लोगों को हॉर्नबिल महोत्सव की बधाई दी और देशवासियों से आग्रह किया कि वे इसके जरिए नगा संस्कृति की जीवंतता का अनुभव करें। प्रधानमंत्री ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, ''हॉर्नबिल महोत्सव के लिए मेरी शुभकामनाएं और नगालैंड के लोगों को इस जीवंत त्योहार के 25 वर्ष पूरे होने पर बधाई। मुझे इस वर्ष के महोत्सव के दौरान अपशिष्ट प्रबंधन और टिकाऊपन पर ध्यान केंद्रित करने की भी खुशी है। उन्होंने कहा, ''कुछ वर्ष पहले इस महोत्सव की अपनी यात्रा से मेरी यादें जुड़ी हैं और मैं दूसरों से आग्रह करता हूं कि वे इसे देखें और नगा संस्कृति की जीवंतता का अनुभव करें।'' प्रधानमंत्री ने यह टिप्पणी नगालैंड के मुख्यमंत्री नेफ्यू रियो के एक पोस्ट पर की, जिसमें उन्होंने हार्नबिल महोत्सव में भाग लेने की जानकारी साझा की थी। रियो ने 'एक्स' पर कहा, ''केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत के साथ किगवेमा गांव में हॉर्नबिल महोत्सव के 25 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में भाग लिया। यह शुभ समारोह एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक कार्यक्रम को चिह्नित करने के साथ ही प्रगति और एकता का प्रतीक भी है। हॉर्नबिल महोत्सव नगालैंड का 10 दिनों का वार्षिक सांस्कृतिक उत्सव है। आम तौर पर, नगालैंड के राज्य दिवस के उपलक्ष्य में एक दिसंबर से 10 दिसंबर तक उत्सव का आयोजन किया जाता है। यह महोत्सव पहली बार वर्ष 2000 में आयोजित किया गया था।

मैं अपना डीएनए टेस्ट कराने के लिए तैयार, मुख्यमंत्री भी डीएनए की जांच कराएं - अखिलेश यादव

लखनऊ, संवाददाता। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के डीएनए वाले बयान पर समाजवादी पार्टी (सपा) प्रमुख अखिलेश यादव ने बृहस्पतिवार को कहा कि वह अपने डीएनए की जांच करवाने के लिए तैयार हैं बशर्ते मुख्यमंत्री भी अपने डीएनए की जांच कराएं। योगी ने अयोध्या में रामायण मेले के उद्घाटन के बाद विपक्षी दलों पर समाज को बांटने का आरोप लगाया और कहा कि अयोध्या व संभल में मुगल शासक बाबर की सेना ने जो किया और आज जो बांग्लादेश में हो रहा है, उसका डीएनए एक ही है। अखिलेश ने कानपुर में संवाददाताओं से कहा, "मुझे नहीं पता कि मुख्यमंत्री कितना विज्ञान जानते हैं और उन्होंने कितनी बायोलॉजी पढ़ी है लेकिन मैं उनसे अनुरोध करना चाहता हूं कि उन्हें डीएनए के बारे में बात नहीं करनी चाहिए। उन्होंने कहा, "आपके (मीडिया) जरिए मैं यह पूरी जिम्मेदारी के साथ कह रहा हूं कि उन्हें डीएनए के बारे में बात नहीं करनी चाहिए। अगर वह डीएनए के बारे में बात करते हैं ।

राघव चड्ढा ने भगत सिंह के लिए की भारत रत्न की मांग

नई दिल्ली, एजेंसी। आम आदमी पार्टी (आप) के सांसद राघव चड्ढा द्वारा स्वतंत्रता संग्राम में शहीद–ए–आजम भगत सिंह के सर्वोच्च बलिदान और योगदान को मान्यता देते हुए उन्हें देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से सम्मानित करने की मांग की गई है। उन्होंने संसद में सरकार से आग्रह किया कि देश की आजादी में भगत सिंह के बलिदान और योगदान को याद करते हुए उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया जाए। संसद में अपने भाषण के दौरान, आप के वरिष्ठ नेता और राज्यसभा सांसद राघव चड्ढा ने कहा, ष्भगत सिंह ने अपनी युवावस्था, सपने और जीवन भारत के स्वतंत्रता संग्राम के लिए समर्पित कर दिया। उनकी शहादत के 93 साल बाद भी, हमने उन्हें वह सम्मान नहीं दिया जिसके वे हकदार थे। राघव चड्ढा ने कहा कि महज 23 साल की उम्र में उन्होंने देश के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया। उनके साहस ने ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला दी और पीढ़ियों को आजादी के लिए लड़ने के लिए प्रेरित किया। उनका सम्मान करना न केवल उनके बलिदान के लिए एक श्रद्धांजलि होगी, बल्कि इससे देश का उत्थान भी होगा। राघव चड्ढा ने भगत सिंह के योगदान को अमूल्य बताते हुए कहा कि मैं शहीद–ए–आजम भगत सिंह जी को अपना आदर्श मानता हूं। वह भारत माता के सच्चे सपूत थे। उनकी क्रांतिकारी सोच और अटूट साहस ने न केवल ब्रिटिश शासन को चुनौती दी, बल्कि भविष्य के लिए प्रेरणा भी दी।ष पीढ़ियों को आजादी के लिए लड़ना होगा। आप सांसद ने तर्क दिया कि भगत सिंह को भारत रत्न देने से न केवल उनकी स्मृति का सम्मान होगा बल्कि भारत के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार की प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी। उन्होंने कहा कि यह सिर्फ एक पुरस्कार नहीं है, यह राष्ट्र के प्रति उनके अमूल्य योगदान को मान्यता देने की दिशा में एक कदम है। उन्होंने सरकार से तेजी से कार्रवाई करने का आग्रह करते हुए कहा, ष्अगर ऐसा किया जाता है, तो आने वाली पीढ़ियां इस संसद को कृतज्ञता के साथ याद रखेंगी। अब समय आ गया है कि भगत सिंह को वह सम्मान दिया जाए जिसके वह असली हकदार हैं।

उमर अब्दुल्ला का आरोप, सोची समझी साजिश के तहत हमारी मस्जिदों को बनाया जा रहा निशाना

जम्मू–कश्मीर, एजेंसी। नेशनल कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष फारूक अब्दुल्ला और मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने आज पार्टी के संस्थापक शेख मुहम्मद अब्दुल्ला को उनकी 119वीं जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की। इस दौरान जम्मू–कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कहा कि अब एक सोची समझी साजिश के तहत हमारी मस्जिदों को निशाना बनाने की कोशिश की जा रही है। ये बात मैंने बार–बार कही है। उन्होंने आगे कहा कि आप कहते हैं कि आप मुसलमानों का तुष्टीकरण नहीं करेंगे, तो ऐसा न करें, हम तुष्टिकरण नहीं चाहते। लेकिन हमें निशाना मत बनाओ। उमर अब्दुल्ला ने कहा कि हमारी मस्जिदों, दरगाहों और जिस तरह हम अपने धर्म का पालन करते हैं उस पर हमला करके आप हमें प्रताड़ित कर रहे हैं और यह वह भारत नहीं है जिसका जम्मू–कश्मीर हिस्सा था। यह वह भारत नहीं है जिसकी हमारे संस्थापकों ने कल्पना की थी। पूर्व सांसद और एनसी विधायक हसनैन मसूदी ने कहा कि यह सब पूजा स्थल (विशेष प्रावधान) अधिनियम के खिलाफ है। संभल में जो हुआ और अन्य स्थानों पर जो प्रयास किए जा रहे हैं – ये विभाजनकारी ताकतें हैं...ऐसी ताकतें हैं जो लोगों के बीच दरार पैदा करने का प्रयास कर रही हैं। यह राष्ट्रहित में नहीं है। उमर अब्दुल्ला ने सुखबीर बादल पर हमले को लेकर भी बयान दिया। उन्होंने कहा कि कल सुखबीर बादल पर हमले के बाद मैंने उनसे बात की. हमने स्थिति के बारे में बात की, जाहिर है, कुछ चीजें जो उन्होंने मेरे साथ साझा कीं, वे सार्वजनिक उपभोग के लिए नहीं हैं। लेकिन अगर दिन के उजाले में पूर्व उपमुख्यमंत्री पर इस तरह से हमला हो सकता है तो ये चिंता की बात है। जाहिर है, इस पर गौर करने की जरूरत है. यह कैसे हुआ और यह सुनिश्चित करना है कि भविष्य में ऐसा न हो।

सम्पादकीय

इंसानियत पर भी सवाल

आज की दुनिया एक बड़े परिवर्तन के दौर गुजर रही है। डिजिटल तकनीक के व्यापक प्रसार ने हमारी दिनचर्या और सोचने के तरीके को पूरी तरह से बदल दिया है। इंटरनेट, कृत्रिम बुद्धिमता और सोशल मीडिया ने न केवल हमें एक नए युग में प्रवेश कराया है, बल्कि हमारी इंसानियत पर भी सवाल खड़े किए हैं। आज जब अपने चारों ओर की दुनिया को देखा जाए तो कोई भी संवेदनशील व्यक्ति यह सोचने पर मजबूर हो सकता है कि क्या यह तकनीकी क्रांति हमें वास्तव में जोड़ कर रख रही है या हमें और भी अलग–थलग कर रही है ! एक श्लोक है– असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय। यानी हमें असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो, और मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो। यह श्लोक इस बात की याद दिलाता है कि सच्चा मार्ग वही है, जो अंधकार और असत्य से मुक्त हो। इसी तरह, आज हमें तकनीक के उजाले में खोते हुए उन मूल्यों को याद रखना होगा, जो हमें मानवता की ओर ले जाते हैं। वास्तविकता में हमने अपनी आसपास की दुनिया से दूरी बना ली है। आभासी दुनिया में जुड़ने के सुख की हकीकत यह है कि सोशल मीडिया पर हजारों लोग दोस्ती की सूची में हो सकते हैं, उन्हें हमारा लिखा हुआ या कोई और सामग्री पसंद आती है, मगर वास्तव में कोई हमसे जुड़ा नहीं होता। हमारा पड़ोसी तक हमारे दुख शामिल नहीं होना चाहता। ज्यादातर लोग एक ही घर में रह कर अपने स्मार्टफोन में डूबे रहते हैं, तो यह स्पष्ट होता है कि इस डिजिटल दुनिया में हम और भी अकेले होते जा रहे हैं। उन दिनों को याद किया जा सकता है, जब में परिवार और दोस्तों के साथ बैठकर हम वास्तविक बातचीत किया करते थे। आज वह आपसी संवाद एक श्कमेंटश या इमोजी तक सीमित हो गया है। किसी व्यावसायिक माल में जमा लोगों को देख कर उनके भी संवेदनशील होने के बारे में अंदाजा लगाया जा सकता है। कुछ समय पहले एक बुजुर्ग एक जगह असहाय बैठे थे। शायद उन्हें मदद की जरूरत थी। चारों ओर से लोग गुजर रहे थे, लेकिन किसी ने उनकी ओर ध्यान नहीं दिया, क्योंकि सभी अपने–अपने स्मार्टफोन या बाजार से खरीदारी में व्यस्त। एक व्यक्ति ने जब उनसे बात की, तब पता चला कि उन्हें अपने बेटे से संपर्क करने में परेशानी हो रही थी । उस व्यक्ति ने उनकी मदद की, तब उनकी आंखों में राहत और आभार का भाव उभरे। तकनीक ने हमें भले ही एक नई दुनिया दी हो, लेकिन हम अपनी इंसानियत और आपसी जुड़ाव से कहीं दूर हो गए यह विडंबना है कि जब हमारे पास इतनी तकनीकी प्रगति है, तो मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याएं भी उसी तेजी से क्यों बढ़ रही हैं। तनाव, अवसाद और अकेलापन जैसे मुद्दे अब आम हो गए हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि डिजिटल युग में इन समस्याओं की वृद्धि इस बात का संकेत है कि हम अपने वास्तविक मानवीय रिश्तों से दूर होते जा रहे हैं। अब वह समय नहीं रहा जब हम अपनों के साथ समय बिताने से आत्मिक शांति पाते थे । एक दौर था जब इंसानियत, प्यार और देखभाल हमारे रिश्तों की नींव हुआ करती थी । अब यह सब डिजिटल संकेत और स्क्रीन पर उभरते श्नोटिफिकेशनश या सूचनाओं और संदेशों में बंधकर रह गया है। विज्ञान ने संसार को एक बहुत बड़ी चीज दी है– तथ्यों को पहचानने की शक्ति। लेकिन प्रेम ही वह तत्त्व है, जो मानव हृदय को सही दिशा देता है।श प्रेमचंद की ये पंक्तियां हमें इस बात का अहसास कराती हैं कि तकनीक और विज्ञान कितनी भी उन्नति कर लें, आखिरकार मानवीय संवेदनाएं ही हमें एक दूसरे से जोड़ती हैं और जीवन को सार्थक बनाती हैं। इस बात को लेकर चिंतित होना चाहिए कि क्या हम वाकई सही दिशा में जा रहे हैं। हालत यह हो गई है कि कोई हादसा हो जाता है, कोई अपराध हो रहा होता है, उस समय भी कुछ लोग मदद पहुंचाने या उसके लिए दौड़ पड़ने के बजाय अपने स्मार्टफोन निकाल कर झट से वीडियो बनाना शुरू कर देते हैं । सवाल है कि क्या तकनीक हमारी संवेदनाओं और सोचने–समझने की दिशा को भी प्रभावित कर रही है। तकनीकी प्रगति ने जीवन को सरल बना दिया है, लेकिन इसने हमारे दिलों को जटिल भी कर दिया है। क्या हम उस बिंदु पर पहुंच चुके हैं, जहां इंसानियत और मानवीय संवेदनाओं को तकनीक से परे एक नया आयाम देना होगा ? इस प्रश्न का उत्तर हम सभी को मिलकर खोजना होगा। तकनीक का सही उपयोग तभी संभव है, जब यह हमारे मानवीय मूल्यों को संजोए रखे। तकनीकी के उपयोग का उद्देश्य हमारी जिंदगी को आसान बनाना था, लेकिन कहीं न कहीं यह हमें आपस में जोड़ने के बजाय भावनात्मक रूप से दूर कर रही है । हमें इस बात का ध्यान रखना होगा कि तकनीक का प्रयोग इंसानियत को मजबूत करने के लिए हो, न कि इसे कमजोर करने के लिए।

भारत-बांग्लादेश के बीच द्विपक्षीय तनाव

आदित्य

पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना वाजेद को ढाका से हटाए जाने के बाद भारत बांग्लादेश के साथ मुश्किल रिश्तों से जूझ रहा है, वहीं दोनों पड़ोसी देशों के बीच संबंध विदेश नीति के राजनीतिकरण से भी प्रभावित हो रहे हैं। बंगाल और त्रिपुरा के कुछ अस्पतालों द्वारा बांग्लादेश के मरीजों का इलाज बंद करने का

हालिया फैसला, असम के एक जिले में व्यापारियों के संगठन द्वारा सीमा पार व्यापार बंद करने का कदम और अगरतला में बांग्लादेश उच्चायोग में सुरक्षा उल्लंघन इस अस्वस्थता के लक्षण हैं। अगस्त की शुरुआत में सुश्री वाजेद को पद छोड़ने के लिए मजबूर किए जाने के बाद से पिछले 15 वर्षों से नई दिल्ली–ढाका संबंधों की पहचान बनी गर्मजोशी की जगह कटुता ने ले ली है। बांग्लादेश में कई लोग भारत पर सुश्री वाजेद की सरकार को सहारा देने का आरोप लगाते हैं, जबकि वह अधिक अलोकप्रिय हो गई हैंय और नई दिल्ली का रणनीतिक समुदाय ढाका में नए नेतृत्व को संदेह की दृष्टि से देखता है। सुश्री वाजेद अभी भी भारत में निर्वासन में हैं और नई दिल्ली ने उन्हें प्रत्यर्पित करने के बांग्लादेश के आह्वान पर चुप्पी साध रखी है, जिससे संबंध और जटिल हो गए हैं। राजनयिकों को इन सभी चुनौतियों से निपटने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। लेकिन धर्म से जुड़ी राजनीति की मौजूदगी उनके काम को और कठिन बना देती है। भारत ने बांग्लादेश में धार्मिक अल्पसंख्यकों पर कई हमलों और समुदाय के अधिकारों की वकालत करने वाले एक हिंदू भिक्षु की हाल ही में गिरफ्तारी के बाद उनमें बढ़ती असुरक्षा की भावना पर अपनी चिंता व्यक्त की है। लेकिन उन वास्तविक चिंताओं को भारत के राजनीतिक अभिजात वर्ग के कुछ वर्गों द्वारा राजनीतिक हथियार में बदल दिया गया है। बंगाल में, भारतीय जनता पार्टी के नेताओं ने बांग्लादेश सीमा पर विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व किया है, जिससे द्विपक्षीय तनाव बढ़ गया है। बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, भाजपा की रणनीति के संभावित राजनीतिक परिणामों से अवगत हैं, उन्होंने केंद्र से धार्मिक अल्पसंख्यकों की रक्षा के लिए बांग्लादेश में संयुक्त राष्ट्र से एक शांति सेना भेजने का आग्रह किया – एक मांग जिसे ढाका ने अस्वीकार कर दिया है। जबकि यह तेजी से स्पष्ट हो रहा है कि नोबेल पुरस्कार विजेता मुहम्मद यूनुस की अंतरिम सरकार बांग्लादेश में कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए संघर्ष कर रही है, नई दिल्ली को अपने संबंधों को चुनावी विचारों और अदूरदर्शी राजनीति से परिभाषित होने देने से बेहतर कुछ करना चाहिए। भारत को बांग्लादेश में अपनी विश्वसनीयता फिर से हासिल करने की जरूरत है। अगर यह दखल देने वाले बिग ब्रदर के रूप में सामने आता है तो यह ऐसा नहीं कर सकता। साउथ ब्लॉक में बैठे राजनयिक शायद इसे समझते हैं। अब समय आ गया है कि राजनेता भी इसे समझें।

एक राष्ट्र एक सदस्यता

संजय

गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक संसाधनों तक पहुंच छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती बनी हुई है, खासकर भारत के दूरदराज के क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण संसाधन सामग्री तक पहुंच छात्रों और अनुसंधान विद्वानों के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती बनी हुई है, खासकर भारत के दूरदराज के इलाकों में। जबकि डिजिटल युग ने सूचना प्रसारित करने के तरीके को बदल दिया है, भौतिक पुस्तकालय अकादमिक उत्कृष्टता की आधारशिला बने हुए हैं। फिर भी, ये आवश्यक ज्ञान केंद्र तेजी से अतीत के अवशेष बनते जा रहे हैं, जो केवल राष्ट्रीय संस्थानों और चयनित विश्वविद्यालयों से जुड़े कुछ विशेषाधिकार प्राप्त लोगों के लिए ही सुलभ हैं। अब तक, देश की प्रत्येक एजेंसी ने अपने डिजिटल लाइब्रेरी संसाधनों के लिए सदस्यता ले ली है, यूजीसी के पास इनफ्लिबनेट है, जो चयनित विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में उपलब्ध है, सीएसआईआर और डीएसटी संस्थानों के पास राष्ट्रीय ज्ञान संसाधन कंसोर्टियम (एनकेआरसी) है आईसीएआर संस्थानों को सीईआरए आदि करोड़ों रुपये का भुगतान करना पड़ता है। कई मामलों में, ये ई–संसाधन केवल मेजबान संस्थान के उपयोगकर्ताओं तक ही सीमित हैं, हालांकि इन्हें सार्वजनिक धन के माध्यम से वित्त पोषित किया जाता है। यदि महत्वाकांक्षी वन नेशन वन सब्सक्रिप्शन पहल को प्रभावी ढंग से लागू किया जाता है, तो इस असमानता को दूर करने और शैक्षिक परिदृश्य को पुनर्जीवित करने की क्षमता है। तकनीकी प्रगति के बावजूद, भारत में अब तक गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक संसाधनों तक पहुंच का लोकतंत्रीकरण नहीं किया जा सका है। अधिकांश कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में पुस्तकालयों को विभिन्न कारणों से चिंताजनक गिरावट का सामना करना पड़ रहा है। पुस्तकालयों में जाने के प्रति युवा पीढ़ी की रुचि की कमी और घटती निधि ने इस संकट को और बढ़ा दिया है। दुर्भाग्य से, कई सार्वजनिक संस्थानों में, मुख्य रूप से राष्ट्रीय संस्थानों से जुड़े पुस्तकालयों में, पुस्तकालय कर्मचारियों में अक्सर पाठकों के लिए स्वागत योग्य वातावरण बनाने के लिए उत्साह और पारस्परिक कौशल का अभाव होता है। यह, बदले में, सबसे वास्तविक पाठकों को भी अलग–थलग कर देता है, जो बाधाओं के बावजूद, पुस्तकालयों में जाने का प्रयास करते हैं। समर्थन की कमी और एक अनामंत्रित माहौल छात्रों और शोधकर्ताओं को शैक्षणिक और बौद्धिक गतिविधियों के लिए पुस्तकालयों को अपना पसंदीदा स्थान बनाने से रोक सकता है, जिससे पुस्तकालय संस्कृति और भी नष्ट हो रही है जो पहले से ही खतरे में है। वन नेशन वन सब्सक्रिप्शन पहल का उद्देश्य एक केंद्रीकृत प्रणाली के माध्यम से राष्ट्रव्यापी उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षणिक संसाधनों तक पहुंच प्रदान करके इन चुनौतियों का समाधान करना है। अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय पत्रिकाओं, डेटाबेस और ई–पुस्तकों के लिए थोक सदस्यता पर बातचीत करके, पहल यह सुनिश्चित कर सकती है कि भौगोलिक या आर्थिक बाधाओं की परवाह किए बिना प्रत्येक छात्र के पास एक राष्ट्रीय संस्थान में एक छात्र या विद्वान को जो मिलता है वह देश के सुदूर कोने में स्थित विश्वविद्यालय में एक छात्र को मिलेगा। यह ज्ञान संसाधन का लोकतंत्रीकरण कर रहा है। हालाँकि, इस पहल की सफलता केवल पहुंच से कहीं अधिक पर निर्भर करती है। भारत को अपने पुस्तकालय पारिस्थितिकी तंत्र को पुनर्जीवित करने के लिए एक समानांतर प्रयास की आवश्यकता है। डिजिटल युग में भी, भौतिक पुस्तकालय प्रतिबिंब और सहयोग के स्थान के रूप में अपूरणीय हैं। सरकार को पुस्तकालयों के आधुनिकीकरण के लिए पर्याप्त धन उपलब्ध कराना चाहिए और कुशल, प्रेरित पुस्तकालयाध्यक्षों की भर्ती के लिए भी कदम उठाना चाहिए जो पाठकों की बढ़ती जरूरतों को समझते हैं।

चिकित्सा में आत्मनिर्भरता के कदम

विनोद

केंद्र सरकार ने पिछले एक दशक में स्वदेशीकरण को बढ़ावा देने के साथ आर्थिक क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हासिल करने के लिए कई पहल की है। इन कोशिशों से दुनिया में भारत की साख बेहतर हुई है। चंद्रयान 3 3 की सफलता के बाद केंद्र सरकार ने अब स्वास्थ्य क्षेत्र में भारतीय वैज्ञानिकों को नया श्कामश सौंपा है। इससे भारत चिकित्सा के क्षेत्र में छलांग लगाने में कामयाब हो सकता है। यह ऐसी योजना है, जो आजाद भारत में पहली बार एक चुनौती के के रूप में पूरी की जानी है। इस तरह की योजना को दुनिया में पहले कभी किसी देश ने नहीं लागू किया। यानी जिन बीमारियों का इलाज कोई नहीं ढूंढ पाया, उसे भारतीय वैज्ञानिक ढूंढेंगे। इसके लिए सरक ने विश्व में प्रथम चुनौती लक्ष्य भी तय किया है, जिसकी जिम्मेदारी नई दिल्ली स्थित भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केंद्र (आइसीएमआर) को सौंपी है। इससे दुनिया में चिकित्सा क्षेत्र में देश की साख एक नए भारत के रूप में बनेगी और यह यह अमेरिका, पेरिका, ब्रिटेन, रूस, चीन, फ्रांस, जापान और जर्मनी के साथ आगे बढ़ सकेगा। जिन विकसित देशों ने चिकित्सा क्षेत्र में नए और मौलिक शोध के जरिए आश्चर्यजनक परिणाम हासिल किए हैं, वहां के वैज्ञानिकों को सभी जरूरी सुविधाए दी गई भारत भी इसी रास्ते पर आगे बढ़ रहा है। हमारी जो वैज्ञानिक मेधा, धन, सुविधाएं और उदारीकरण के कारण विदेश चली जाती थी, वह अब भारत में रह कर अपनी विलक्षण प्रतिभा का लोहा मनवाएगी, क्योंकि केंद्र सरकार शोधार्थी वैज्ञानिकों को सभी कुछ मुहैया करा रही है, जिससे चिकित्सा क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल हो सकें। सरकार की इस नई योजना को पूरा करने के लिए देश के चिकित्सा संस्थानों को मिल कर काम करना होगा। कुछ दिनों पहले केंद्र सरकार एक पत्र भी जारी किया है, जिसमें कहा गया है कि चंद्रमा के दक्षिण ध्रुव पर उतरे चंद्रयान 3 से प्रेरित होकर दुनिया में पहली बार चिकित्सा के क्षेत्र में भारत एक ऐसी पहल करने जा रहा है, जिससे उसके वैज्ञानिकों को नए और लीक से हट कर विचारों पर काम करने का 1 मौका मिलेगा। गौरतलब है कि देश में वैज्ञानिकों ने कोरोना के दौरान कोविड 19 के टीके तैयार करने अपनी पूरी शोध शक्ति लगा दी थी। केंद्र सरकार ने तीन तरह के टीके तैयार करवाए थे, जो दुनिया के अनेक देशों को सहयोग के रूप में भेजे गए थे। इससे भारत की दुनिया में प्रशंसा हुई। केंद्र सरकार शोध के जरिए दवा खोजने और उपचार करने के मद्देनजर आगे बढ़ रही वष्य में हो सकने वाली नई बीमारियों के उपचार के लिए शोध वास्ते केंद्र सरकार की तरफ से धन मुहैया कराया जा रहा है निश्चित है कि इससे चिकित्सा जगत में भारत विकसित देशों में शुमार होने की कतार में खड़ा हो सकेगा। यदि भविष्य में हो सकने वाली नई बीमारियों का बेहतर उपचार हमारे चिकित्सा वैज्ञानिकों ने खोज लिया, तो भारत दुनिया का महत्त्वपूर्ण चिकित्सा शोधार्थी के रूप में प्रतिष्ठित हो जाएगा। केंद्र सरकार ने आइसीएमआर के जरिए सबसे जटिल बीमारियों के उपचार के लिए वैज्ञानिकों को तैयार करने का निश्चय किया है। इससे वे जटिल बीमारियों का उपचार करने के लिए प्रेरित होंगे। इस पहल का उद्देश्य लीक से हट कर भविष्य की तैयारियों, नए ज्ञान सृजन और खोज को बढ़ावा देना है। इससे बेहतर औषधियां और नए टीके मिलेंगे। लोगों का आसानी से उपचार हो सकेगा। आइसीएमआर के मुताबिक, अगले कुछ सप्ताह में सभी प्रस्तावों को एकत्रित करने के बाद समिति इनका मूल्यांकन करेगी और उसके बाद अंतिम प्रस्तावों पर शोध होंगे, जिन्हें अधिकतम तीन साल में पूरा करना होगा। इस पहल में सभी सरकारी मेडिकल कालेज, देश के सभी शीर्ष चिकित्सा संस्थानों के साथ दिल्ली सहित सभी एम्स, आइसीएमआर के सभी संस्थानों के अलावा यूजीसी, एआइसीटीई और एनएमसी में पंजीकृत संस्थानों के शोधकर्ता शामिल हो सकते हैं। इस लिहाज से देखें तो देश के सबसे बड़े चिकित्सा संस्थानों और शिक्षा संस्थाओं एवं संगठनों के जरिए आजादी के बाद चिकित्सा क्षेत्र में गंभीर पहल की गई है। चिकित्सा के क्षेत्र में भारत प्रत्येक नागरिक को बेहतर चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराने में अभी बहुत पीछे है। ऐसे में लाइलाज, असंभव लगने वाली बीमारियों का इलाज करने के मद्देनजर केंद्र सरकार की यह यह पहल स्वागतयोग्य है। मगर सवाल है कि क्या सरकार कैंसर, पक्षाघात, मधुमेह, हृदयघात और अस्थमा जैसी बीमारियों का बेहतर इलाज, खासकर गांवों में आम आदमी को, उपलब्ध करा पाई है। केंद्र की नीतियां इस वक्त बेहतर योजनाओं के जरिए सबको समुचित सहूलियतें मुहैया कराने 1 की है। है। इनका उद्देश्य हर क्षेत्र में आत्मनिर्भरता बढ़ाते हुए कामयाबी की उन बुलंदियों को हासिल करना है, जो विकासशील देशों के देशों के लिए करीब नामुमकिन माना जाता है। चिकित्सा क्षेत्र में नए शोध कराने और बेहतर परिणाम हासिल कर उसे मानवता के उपयोग के लिए देने की नीति निश्चय ही भारत की सर्वजन हिताय वाली नीति का ही हिस्सा है। भारत में सात दुर्लभ रोगों में से महज पांच फीसद बीमारियों का इलाज ही ही संभव है। अभी देश में देश में हालत यह है कि बीस में से एक व्यक्ति किसी न किसी रोग से पीड़ित है और उसका उपचार समुचित तरीके से नहीं हो पा रहा है। आइसीएमआर के मुताबिक, देश में सात करोड़ और दुनिया में 35 में 35 करोड़ लोग दुर्लभ बीमारियों से ग्रस्त हैं। भारत में ऐसी अनेक बीमारियों से लोग पीड़ित हैं, जिनके लक्षण देख कर डाक्टर समझ पाते कि यह बीमारी है क्या! मिसाल के तौर पर 'एसेंथामोएबा केराटाइटिस ऐसी बीमारी है जिससे आदमी अंधा हो जाता है। इसका समुचित इलाज भारत में उपलब्ध नहीं है। इसी तरह क्रुत्जफेल्ट–जैकब ऐसी लाइलाज बीमारी है, जिसकी वजह से घातक मस्तिष्क घात हो जाया लक्षण के आधार पर समुचित तरह हजारों बीमारियां हैं, जिनके लिए सस्ता, सहज और कारगर इलाज खोजने की जरूरत है। केंद्र सरकार को चाहिए कि लाइलाज बीमारियों । और दुर्लभ बीमारियों के इलाज के लिए सबसे पहले गौर करे, जिस पर अभी शोध की बहुत जरूरत है। वर्तमान में केंद्रीय तकनीकी समिति (सीटीसीआरडी) की सिफारिश पर असाध्य रोगों के लिए राष्ट्रीय नीति के तहत 63 रोगों को ही शामिल किया गया है। इसमें प्रति रोगी 50 लाख तक की वित्तीय सहायता दी जाती है। भारत में चिकित्सा उपचार केंद्रों की संख्या जरूरत से बहुत कम कम है। गांवों में तो स्थिति और खराब है। इसलिए इस तरफ समुचित ध्यान जरूरत है। इसी तरह आबादी के मुताबिक चिकित्सकों की संख्या बहुत कम है। गांवों में एक लाख आबादी पर एक डाक्टर ही उपलब्ध है। इसलिए अब भविष्य में होने वाली बीमारियों के नए उपचार की खोज करनी होगी। वहीं, वर्तमान में लाइलाज, दुर्लभ और अति गंभीर बीमारियों के सहज और सबको समुचित उपचार उपलब्ध कराने पर भी सोचने की जरूरत है।

कार्रवाई करने की जरूरत, बांग्लादेश के हिंदुओं को खतरा

ललित

1971 में बांग्लादेश के मुक्ति संग्राम के बाद की घटनाओं के बाद, एक युवा हिंदू – उसके नाम के टैग से पता चलता है – थका हुआ खाकी वर्दी में मुक्ति वाहिनी के लड़ाके ने मुझे जेसोर स्टेशन के प्लेटफॉर्म पर बताया कि मेरी सोच पुरातन और विनाशकारी है। उसने जोर देकर कहा कि हिंदू और मुसलमान अलग–अलग इकाई के रूप में अस्तित्व में नहीं रह गए हैं। हर कोई बांग्लादेशी था। मुझे नहीं पता कि वह सपना कितने समय तक चला, लेकिन मुझे एक साल बाद पता चला कि उसने बांग्लादेश छोड़ दिया है और पश्चिम बंगाल में शरण ली है। वह युवा सैनिक जॉनी मूर की रिपोर्ट के कारण याद आता है, जो पहले यूनाइटेड स्टेट्स कमीशन ऑन इंटरनेशनल रिलीजियस फ्रीडम के सदस्य थे, उन्होंने कहा था कि देश में कोई भी अल्पसंख्यक ऐसा नहीं है जो अभी खतरे में महसूस न करता होष। मुक्ति के समय बांग्लादेश की आबादी में हिंदुओं की संख्या 22 प्रतिशत थी। अब वे 174 मिलियन बांग्लादेशियों में से लगभग आठ प्रतिशत या 13 मिलियन से कुछ अधिक हैं। बौद्ध और ईसाई जैसे अन्य अल्पसंख्यक कुल आबादी का एक प्रतिशत से भी कम हैं। 1901 से अब तक की हर जनगणना में पूर्वी बंगाल की हिंदू आबादी में गिरावट देखी गई है, जो 1947 में पूर्वी पाकिस्तान और 1971 में बांग्लादेश बन गया। संख्या में सबसे तेज गिरावट 1941 और 1974 के बीच हुई थी। बांग्लादेश के 64 जिलों में से चार में हर पांचवां व्यक्ति हिंदू था। लेकिन 1964 से 2013 के बीच 11 मिलियन से अधिक हिंदू धार्मिक उत्पीड़न का हवाला देते हुए पूर्वी पाकिस्तानध्बांग्लादेश से भाग गए। हिंदू अमेरिकन फाउंडेशन का कहना है कि लगभग 230,000 हिंदू हर साल बांग्लादेश छोड़ते रहते हैं। एक अन्य संगठन, बांग्लादेश हिंदू बौद्ध ईसाई एकता परिषद का दावा है कि इस साल 5 अगस्त को शेख हसीना की अवामी लीग सरकार गिरने और उनके भारत भाग जाने के बाद से 50 जिलों में हिंदुओं पर 200 से अधिक हमले हुए हैं। जनगणना का दावा है कि पिछले दशक में हिंदुओं की संख्या में 0.59 प्रतिशत की कमी आई सबसे पहले, पलायन हो रहा है, यानी हिंदू देश छोड़ रहे हैं। सिंगापुर के मेरे पुराने मित्र और सहकर्मी, इतिहासकार ज्ञानेश कुदैस्या ने लिखा है कि विभाजन के बाद 11.4 मिलियन हिंदू (अविभाजित बंगाल की हिंदू आबादी का 42 प्रतिशत) पूर्वी बंगाल में रह गए। 2021 में एक राष्ट्रीय समाचार पत्र में व्यक्त संजीब बरुआ का विचार थारू ष्पश्चिमी पाकिस्तानी जनरलों ने गणना की थी कि लाखों पूर्वी पाकिस्तानी हिंदुओं को भारत भागने के लिए मजबूर करके, वे एक राजनीतिक ताकत के रूप में बंगाली राष्ट्रवाद को कमजोर कर देंगे। संख्या में गिरावट का दूसरा कारण हिंदुओं में अपेक्षाकृत कम प्रजनन दर है, यानी दंपतियों के कम बच्चे होते हैं। जनसांख्यिकीविद्, जे. स्टोकेल और एम.ए. चौधरी ने अपने 1969 के पेपर, डिफरेंशियल फर्टिलिटी इन ए रूरल एरिया ऑफ ईस्ट पाकिस्तान में लिखा, जो मिलबैंक मेमोरियल फंड क्वार्टरली में प्रकाशित हुआ, कि मुसलमानों की कुल वैवाहिक प्रजनन दर (वैवाहिक प्रजनन क्षमता का एक आजीवन माप) हिंदुओं के लिए 5.6 की तुलना में प्रति महिला 7.6 संतान थी। शेख हसीना के शासनकाल में आर्थिक विकास दर में उछाल के बावजूद, बांग्लादेश एक गरीब देश है, जिसकी आबादी का घनत्व बहुत अधिक है और यहां नियमित रूप से विनाशकारी बाढ़ आती रहती है। भूमि की अत्यधिक मांग के कारण, यह समझ में आता है कि हिंदू किसान विभिन्न प्रकार के अधिग्रहण के प्रति संवेदनशील हैं। इस समस्या का एक गंभीर राजनीतिक आयाम भी है। अस्सी वर्षीय बांग्लादेशी अर्थशास्त्री, उद्यमी, राजनीतिज्ञ और नागरिक समाज के नेता मुहम्मद यूनुस, जिन्होंने 2006 में नोबेल शांति पुरस्कार जीता और शेख हसीना के पद छोड़ने के बाद से अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार के रूप में नेतृत्व कर रहे हैं, इसे थोड़ा सरल तरीके से कहते हैं। वे कहते हैं, जब (शेख) हसीना और अवामी लीग के अत्याचारों के बाद देश उथल–पुथल से गुजर रहा था, तो उनके साथ रहने वालों पर भी हमले हुए। ष्अब, अवामी लीग के कार्यकर्ताओं की पिटाई करते समय, उन्होंने हिंदुओं की भी पिटाई की क्योंकि ऐसी धारणा है कि बांग्लादेश में हिंदुओं का मतलब अवामी लीग के समर्थक हैं। नोबेल पुरस्कार विजेता ने तुरंत कहारू ष्मैं यह नहीं कह रहा हूं कि जो हुआ वह सही है, लेकिन कुछ लोग इसे संपत्ति जब्त करने के बहाने के रूप में इस्तेमाल कर रहे हैं। इसलिए, अवामी लीग समर्थकों और हिंदुओं के बीच कोई स्पष्ट अंतर नहीं है। यहां इस बात पर जोर दिया जाना चाहिए कि अवामी लीग बांग्लादेश की स्वतंत्रता की पार्टी है। शेख हसीना के पिता, शेख मुजीबुर रहमान, जिन्हें कई लोग राष्ट्रपिता के रूप में पूजते हैं, इसके सबसे प्रसिद्ध नेता थे। सौभाग्य से, वह और उनकी बहन अगस्त 1975 में विदेश में थे, जब पाकिस्तान समर्थक इस्लामिस्ट सहानुभूति रखने वाले मध्यम श्रेणी के बांग्लादेशी सेना के अधिकारियों के एक समूह ने शेख, उनके लगभग पूरे परिवार और उनके कुछ करीबी राजनीतिक सहयोगियों की हत्या कर दी थी। नई दिल्ली में श्रीमती इंदिरा गांधी की कांग्रेस सरकार, जो 1971 में बांग्लादेश के मुद्दे पर पाकिस्तान के साथ युद्ध में गई थी और जो हमेशा शेख की प्रबल समर्थक रही थी, 1975 के रक्तपात के बाद उनकी दोनों बेटियों के साथ खड़ी रही। तब से भारत ने अवामी लीग को अपना समर्थन देना बंद नहीं किया है, जबकि जनरल जिया–उर–रहमान, जनरल एच.एम. इरशाद और बेगम खालिदा जिया जैसे अन्य बांग्लादेशी शासकों के साथ उसके संबंध बिल्कुल सही थे। शेख हसीना के लिए विशेष गर्मजोशी थी, जो 1996 से 2001 तक और फिर 2009 से 2024 में उन्हें उखाड़ फेंकने तक प्रधान मंत्री थीं। बदले में, उनकी सरकार ने यह सुनिश्चित किया कि बांग्लादेश की भूमि का उपयोग भारत की सुरक्षा को खतरे में डालने के लिए नहीं किया जाएगा और शेष बांग्लादेशी हिंदुओं को किसी भी तरह के उत्पीड़न का सामना नहीं करना पड़ेगा। डॉ यूनुस का दावा है कि जब वह अल्पसंख्यक समुदाय के नेताओं से मिलते हैं, तो वह उनसे समान अधिकारों वाले बांग्लादेश के नागरिकों के रूप में विरोध करने का आग्रह करते हैं, न कि केवल हिंदू के रूप में। "यहां तक कि जब मैं हिंदू समुदाय के सदस्यों से मिला, तो मैंने उनसे अनुरोध किया– कृपया खुद को हिंदू के रूप में न पहचानेंय इसके बजाय, आपको कहना चाहिए कि आप इस देश के नागरिक हैं और आपके समान अधिकार हैं। अगर कोई नागरिक के रूप में आपके कानूनी अधिकारों को छीनने की कोशिश करता है, तो उसके उपाय हैं न ही नागरिकता (संशोधन) अधिनियम भारतीय नागरिकता के लिए त्वरित मार्ग है क्योंकि यह केवल उन लोगों पर लागू होता है जो 2014 तक भारत आए हैं। विभाजन के समय जनसंख्या के आदान–प्रदान पर चर्चा की गई थी। फिर, नेहरू–लियाकत अली समझौते ने सुरक्षा की भावना प्रदान करने की कोशिश की। आखिरकार, भारत में कट्टरपंथी हिंदू तत्वों ने उन लोगों के लिए मातृभूमि के रूप में पूर्वी पाकिस्तानध्बांग्लादेश क्षेत्र का एक टुकड़ा मांगा, जिन्हें दूसरी बार बेदखल किया गया था। भीड़भाड़ वाले बांग्लादेश के लिए क्षेत्र को छोड़ना संभव नहीं है। लेकिन कम संख्या जनसंख्या विनिमय को कम चुनौतीपूर्ण संभावना बनाती है। लीग ऑफ नेशंस के तत्वावधान में कम से कम 1.6 मिलियन ईसाइयों और मुसलमानों को शामिल करते हुए ग्रीस और तुर्की के बीच 1923 में आबादी का आदान–प्रदान एक मिसाल पेश करता है।

पूर्वोत्तर ने भारत को स्वयं को पुनः आविष्कृत करने का साहस दिया

रमेश

पूर्वोत्तर का विचार दिलचस्प है। यह एक दिशा को इंगित करता है, इसलिए इसे एक विशेषण खंड के रूप में ही रहना चाहिए था – उत्तर–पूर्व। यह वास्तव में कुछ हद तक करता है, लेकिन धीरे–धीरे हाइफन को हटा दिया जाता है ताकि यह कई सूक्ष्म अर्थों के साथ एक–शब्द उचित संज्ञा बन जाए। कई छवियों में जंगल, विदेशी रीति–रिवाज, प्राचीन परिदृश्य, विद्रोह, समझ से परे आदिवासी झगड़े, अविकसितता आदि शामिल हैं। सिक्किम सहित आठ राज्यों की मिश्रित भूगोल की तस्वीर भी उभरती है, जब यह पूर्व हिमालयी राज्य 1975 में भारत का हिस्सा बन गया था। भावना में, शायद उत्तर बंगाल/दार्जिलिंग को भी शामिल किया जाना चाहिए, क्योंकि भौगोलिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक रूप से पश्चिम बंगाल का यह परिधीय विस्तार इस क्षेत्र के साथ कई समानताएँ साझा करता है। किसी क्षेत्र के चरित्र और व्यक्तित्व से इतना घनिष्ठ रूप से कैसे जुड़ गया? सवाल अनिवार्य रूप से ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की विरासत को सामने लाएगा। यदि इस निर्देशांक का आधार भारत की राष्ट्रीय राजधानी होती, तो यह क्षेत्र ठीक पूर्व में होना चाहिए था, न कि उत्तर–पूर्व में, क्योंकि यह स्थान नई दिल्ली के ठीक पूर्व में स्थित है। जाहिर है, जब इस क्षेत्र को पहली बार भारतीय मानचित्र पर शामिल किया गया था, तब इसका आधार अलग था, जो कि 1826 में बर्मा (अवा साम्राज्य) के साथ हस्ताक्षरित यंदाबू की संधि द्वारा असम के औपचारिक रूप से ब्रिटिश भारत में विलय के बाद है, जिसने असम पर बर्मा द्वारा किए गए विनाशकारी आक्रमण और कब्जे को समाप्त कर दिया। विलय के बाद, यह नया क्षेत्र बंगाल में विलय हो गया और 1874 तक ऐसा ही रहा, जब असम को अलग कर दिया गया और एक अलग मुख्य आयुक्त का प्रांत बना दिया गया। तब इसने त्रिपुरा और मणिपुर, अलग–अलग रियासतों को छोड़कर लगभग पूरे पूर्वोत्तर का गठन किया। तत्कालीन ब्रिटिश भारत की राजधानी कलकत्ता से, पूर्वोत्तर वास्तव में उत्तर–पूर्व में था। इस क्षेत्र पर उत्तर–पूर्व का उपयोग करना शुरू किया। इसमें अलेक्जेंडर मैकेंजी के आधिकारिक दस्तावेजों का संग्रह शामिल है, जिसे उनकी 1884 की पुस्तक, बंगाल के उत्तर–पूर्वी सीमांत क्षेत्र की पहाड़ी जनजातियों के साथ सरकार के संबंधों का इतिहास में संकलित किया गया है। भौगोलिक दृष्टि से, जो बात इस क्षेत्र को अद्वितीय बनाती है। वह यह है कि इसकी सीमा का केवल लगभग 2 प्रतिशत हिस्सा उस देश के साथ साझा होता है, जिसका यह हिस्सा है।

छावनी सार्वजनिक चिकित्सायल में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय

लखनऊ.छावनी क्षेत्र में स्थानीय नागरिकों के लिए मैक्स चिकित्सालय लखनऊ द्वारा छावनी सार्वजनिक चिकित्सायल में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया।इस स्वास्थ्य शिविर का शुभारंभ छावनी परिषद के मुख्य अधिशासी अधिकारी अभिषेक राठौर ने मुख्य अतिथि के रूप में किया। कार्यक्रम का प्रारंभ में ससलैब्स फाउंडेशन के संस्थापक निदेशक वारीश

प्रताप ने पुष्पगुच्छ भेट कर छावनी परिषद के मुख्य अधिशासी अधिकारी अभिषेक राठौर का स्वागत किया। इस कार्यक्रम में मैक्स चिकित्सालय के वरिष्ठ प्रबंधक आशीष शर्मा ने नामित सदस्य प्रमोद शर्मा को कार्यक्रम में उपस्थित होन के लिए हद्वय से धन्यवाद ज्ञापित किया।

लगातार जलती स्ट्रीट लाइटें एवं बिजली के खम्भों पर झूलते केबल

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय

लखनऊ। समाजसेवी रूप कुमार शर्मा ने बताया कि भारत सरकार की योजना आर.डी.एस.एस. के अंतर्गत बिजली विभाग के द्वारा बिजली के तार बदल कर एरियल बंच कंडक्टर (ए. बी. सी.) लगाए जा रहे हैं। ए. बी. सी. तार बदलते समय बिजली विभाग के द्वारा मार्ग प्रकाश के कनेक्शन भी काट दिए जा रहे हैं तथा लगभग सभी लाइटों को सीधे जोड़ दिया जा रहा है जिसके कारण लाइटें लगातार जल रही हैं। स्ट्रीट लाइटें लगातार जलने के कारण जहां एक ओर लाइटों की लाइफ कम हो रही है वहीं दूसरी ओर बिजली की बरबादी भी हो रही है। बिजली के खम्भों पर लगे टेलीकॉम कंपनियों के तार काट कर छोड़ दिए जा रहे हैं और कटे हुए तार सड़कों पर झूल रहे हैं जो पैदल चलने वालों, साइकिल व दो पहिया वाहन चालकों के लिए परेशानी का सबब बन रहे हैं। इन झूलते तारों के कारण कभी भी कोई दुर्घटना घटित हो सकती है। विवेक खण्ड 3, 4 में बिजली के तार बदले जा रहे हैं तथा स्ट्रीट लाइटें लगातार जल रही हैं। स्ट्रीट लाइटों के कनेक्शन को सही करवा कर लगातार जल रही लाइटों को सही कराने की आवश्यकता है। इसके साथ ही साथ बिजली के खम्भों से लटकते व झूलते हुए तारों को अविलंब हटवाने हेतु आवश्यक कार्यवाही करने का कष्ट करें ताकि होने वाली दुर्घटना से बचा जा सके।

एनबीआरआई-ईआईएसीपी कार्यक्रम केंद्र के द्वारा विश्व मृदा दिवस के अवसर पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय

लखनऊ ।सीएसआईआर–एनबीआरआई लखनऊ स्थित पर्यावरण सूचना, जागरूकता, क्षमता निर्माण और आजीविका कार्यक्रम केंद्र (ईआईएसीपी) के द्वारा दिनांक 5 दिसंबर, 2024 को चंद्र भानु गुप्त कृषि पीजी कॉलेज, लखनऊ में विश्व मृदा दिवस–2024 के अवसर पर एक जागरूकता कार्यक्रम– मिट्टी की देखभालरू मापन, अनुश्रवण, प्रबंधन का आयोजन किया गया। जिसमे 104 छात्रों और 12 शिक्षकों ने भाग लिया । इस कार्यक्रम का उद्देश्य स्थायी पारिस्थितिकी तंत्र और खाद्य सुरक्षा के लिए मृदा स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना था। इस अवसर पर कॉलेज की प्राध यापक डॉ. फिदा हुसैन अंसारी ने खाद्य उत्पादकता और पोषण गुणवत्ता पर चर्चा की, जबकि प्रो. गजेंद्र सिंह ने मिट्टी की गुणवत्ता और जैव विविधता पर कीटनाशकों और कीटनाशकों के नकारात्मक प्रभावों पर प्रकाश डालते हुए भविष्य के लिए मिट्टी की देखभाल के महत्व पर जोर दिया। एनबीआरआई– ईआईएसीपी के समन्वयक डॉ. पंकज कुमार श्रीवास्तव ने छात्रों को केंद्र की गतिविधियों और मिशन लाइफ के सात विषयों के बारे में जानकारी दी, जिसमें पर्यावरण स्थिरता के लिए व्यक्तिगत पहलुओं पर जोर दिया गया। संस्थान की वैज्ञानिक और केंद्र की सह–समन्वयक डॉ. अंजू पटेल ने विश्व मृदा दिवस की थीम पर अपना व्याख्यान अपने व्याख्यान में मृदा स्वास्थ्य को मापने, निगरानी करने और प्रबंधित करने की आवश्यकता पर बल दिया। डॉ. अंजू ने मृदा स्वास्थ्य के लिए खतरों के साथ साथ संसाधन की रक्षा की साझा जिम्मेदारी बढ़ाने पर जोर दिया। इस अवसर पर छात्रों के लिए एक रैपिड–फायर क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए ष्एक पेड़ माँ के नामष पहल के तहत छात्रों द्वारा वृक्षारोपण भी किया गया। कार्यक्रम का समापन प्रो. योगेश शर्मा पूर्व निदेशक द्वारा मिशन लाइफ की शपथ और डॉ. सत्येंद्र कुमार सिंह, सह–आचार्य द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

एआरटीओ प्रशासन ने कार्यशाला में व्यावसायिक चालकों को बताया सुरक्षात्मक उपाय

अयोध्या। डीटीटीआई में चल रहे व्यावसायिक वाहनों के चालकों के प्रशिक्षण के तहत शुक्रवार को एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।जहाँ पर 32 व्यावसायिक चालकों को एआरटीओ प्रशासन डॉ आर पी सिंह ने सड़क सुरक्षा के नियमों के बारे में बताया। इस मौके पर उन्होंने वहां पर मौजूद चालकों को संकेत तथा सड़क पर वाहन चलाते समय बरतने वाली सावधानियां एवं कोहरे के मौसम में वाहनों के संचालन के बारे में अवगत कराते हुए ट्रैक

पर भी व्यावसायिक चालकों को प्रशिक्षित कर आवश्यक दिशा निर्देश एवं जानकारियां दी गई।दुर्घटना के बाद दुर्घटना में घायल व्यक्तियों की सहायता करना तथा सरकार द्वारा सहायता करने वाले व्यक्ति को पारितोषिक दिए जाने के बारे में भी अवगत कराया गया। इस मौके परिवार उन्होंने बताया कि शनिवार को भी व्यावसायिक वाहन चालकों का प्रशिक्षण शिविर आयोजित कर कार्यशाला का समापन किया जाएगा।

कम्युनिटी पुलिसिंग एवं महिला सशक्तिकरण हेतु महिला सम्मान, सुरक्षा व जागरूकता के लिए चलाया जा रहा विशेष अभियान

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय

लखनऊ। पुलिस अधीक्षक हरदोई के निर्देशन में जनपद के समस्त थानों में नियुक्त महिला बीट अधिकारियों द्वारा ग्राम चौपाल का आयोजन कर महिलाओं की समस्याओं का किया जा रहा निस्तारण। महिलाओं को विभिन्न उपयोगी हेल्पलाइन नम्बरों, संचालित विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं, महिला हेल्प डेस्क व कानूनी प्रावधानों की जानकारी देकर व पम्पलेट वितरित कर किया जा रहा सशक्त । सभी का उद्देश्य जनकल्याण व मानव समाज की सेवा करना शासन प्रसासन महिलाओं की सुरक्षा सम्मान व उनके उत्थान व सशक्तिकरण हेतु प्रतिबद्ध है। मिशन शक्ति–05 उ०प्र० शासन के आदेशानुसार महिला सशक्तिकरण हेतु चलाए जा रहे षमिशन शक्तिष अभियान फेज–05 के अंतर्गत पुलिस अधीक्षक जनपद हरदोई के निर्देशन में जनपदीय पुलिस द्वारा बालिकाओंध्छात्राओं एवं महिलाओं के साथ घटित होने वाले अपराधों पर प्रभावी रोकथाम एवं अभियान को सफल बनाए जाने हेतु गांव– गांव/मौहल्ला/शिक्षण संस्थानों इत्यादि स्थानों पर चौपाल लगाकर छात्राओंध्बालिकाओं एवं महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने हेतु चलाये जा रहे मिशन नारी सुरक्षा, नारी सम्मान, नारी स्वावलंबन के दृष्टिगत सुरक्षा जागरूकता के संबंध ा में महत्वपूर्ण जानकारियां, जैसे विभिन्न हेल्पलाइन नंबर, महिला हेल्प डेस्क, एंटी रोमियों स्क्वायड, बाल श्रम उन्मूलन, शक्ति दीदी, यूपी–112, वूमेन पावर लाइन–1090 व आत्मरक्षा संबंधी टिप्स एवं कल्याणकारी योजनाओं जैसे मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना, निराश्रित महिला पेंशन उ०प्र० राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन राष्ट्रीय पोषण मिशन, रानी लक्ष्मीबाई बाल एवं महिला सम्मान कोष, मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना, प्रधानमंत्री मात्र वन्दना योजना आदि के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी देकर जागरूक किया गया।

नृत्य, गायन कला से गुलजार रही महोत्सव की शाम

भोजपुरी रैपर विनय किंग ने मंच पर बिखेरा जादू

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय

लखनऊ । स्मृति उपवन में माँ गायत्री जन सेवा संस्थान एवं नीशू वेलफेयर फाउंडेशन द्वारा आयोजित हिंदुस्तान हस्तशिल्प महोत्सव में अध यक्ष अरुण प्रताप सिंह व गुंजन वर्मा और सूरज जैसवानी दीप प्रज्वलित कर सांस्कृतिक संध्या का शुभारंभ किया। सांस्कृतिक संध्या में नृत्य, गायन कला से गुलजार रही महोत्सव की शाम। नव निर्माण परिवर्तन फाउंडेशन के द्वारा संचालित दिवाकर सांस्कृतिक कल्चर ग्रुप के बच्चों द्वारा प्रस्तुति में आयो रे आयो रे रंगीलो मारो ढोलना..... अनोखी शर्मा ने नृत्य कर दर्शकों को आकर्षित किया वहीं नैनो वाले ने.... प्रियांशी चौधरी द्वारा नृत्य कर दर्शकों को झूमाया। सांस्कृतिक मंच के अगले सोपान में पल पल दिल के पास..... व जादू तेरी नजर..... मयंक दिवाकर ने

गीत गाकर दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया। अगले क्रम में दिल कश्ती पर सवार चले आए..... प्रसून शाह ने गीत प्रस्तुत कर समां बांधा। सांस्कृतिक संध्या में विनय किंग भोजपुरी रैपर ने दर्शकों के बीच जलवा बिखेरा। भोजपुरी सुपरस्टार पवन सिंह ने विनय सिंह को लांच किया था एवं भोजपुरी स्टार रवि किशन द्वारा पूर्व में सम्मानित भी किया है। विनय किंग को यूपी और बिहार में वायरल बॉय के नाम से जाना जाता है। आयोजक अरुण प्रताप सिंह एवं गुंजन वर्मा ने कलाकारों को अंगवस्त्र एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। इस दौरान मंच पर आयोजक समिति के विनय दुबे, रनवीर सिंह, हेमू चौरसिया,मनोज सिंह चौहान उपस्थित रहे। मंच का संचालन प्रदीप शुक्ला ने किया।

किशोरवय छात्रों हेतु संचेतना कार्यक्रम सम्पन्न

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय

झबरेड़ा, हरिद्वार। पीएम श्री राजकीय इंटर कॉलेज लाठर देवा हूण नारसन के प्रांगण में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान रुड़की के सौजन्य से प्राचार्य डॉक्टर कैलाश डंगवाल के तथा कार्यक्रम समन्वयक जान आलम के निर्देशन में किशोरवय छात्रों हेतु संचेतना कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम के द्वारा स्वास्थ्य स्वच्छता, साइबर सेफ्टी, आपदा प्रबंधन, करियर एंड गाइडेंस विषय के बारे में कक्षा 9 से 12 तक के छात्र तथा छात्राओं को जानकारी दी गई। कार्यक्रम की शुरुआत मे विद्यालय के प्रधानाचार्य चंद्रपाल ने यातायात अधिकारी रुड़की विनय तिवारी का स्वागत पुष्प गुच्छ प्रदान करके किया। यातायात अधिकारी विनय तिवारी ने यातायात के नियमों के बारे में छात्र–छात्राओं को जानकारी दी, स्वास्थ्य स्वच्छता के बारे में स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी नेहा कश्यप ने गहन जानकारी दी।

आपदा प्रबंधन के बारे में मनोज कंडियाल ने जानकारी दी। इस अवसर पर अंजू मलिक प्रवक्ता डाइट , रविंद्र सिंह, अनमोल सालार, लक्ष्य सालार, शैलेंद्र कुमार, विपुल सालार, रविंद्र पाल , दिनेश सिंह, सुशील कुमार, आलोक द्विवेदी, सतीश प्रताप नारायण आदि उपस्थित रहे।

महान संस्कृति से भारत को विश्व में मिले पहचान– सुधा मूर्ति

ब्यूरो प्रमुख

विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर/ दिल्ली। भारत का युवा अगर अपने देश के अतीत और इतिहास को नहीं जाने का तो वह भविष्य को नहीं जान पाएगा। भारतीय इतिहास का दस्तावेजीकरण सही तरीके से नहीं किया गया इसलिए बहुत सारे महत्वपूर्ण तथ्य आज हमारे सामने नहीं है। हम अपने इतिहास से बहुत कुछ सीखते हैं। भारत को सिर्फ बॉलीवुड और सॉफ्टवेयर के लिए न जाना जाए बल्कि इसकी महान संस्कृति के लिए पूरे विश्व में पहचान मिले यह भी बहुत जरूरी है। उक्त बातें राज्यसभा सांसद पद्म श्री एवं पद्म भूषण श्रीमती सुधा मूर्ति ने हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में बोगनवेलिया आर्ट फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित बोधगया के विहार पुस्तक के विमोचन एवं परिचर्चा कार्यक्रम में कहीं. उन्होंने कहा कि बुद्ध एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने शांति की स्थापना की. इस कॉफी टेबल बुक के माध्यम से बोधगया के विहारों का बड़ा सुंदर तरीके से प्रस्तुतीकरण किया गया है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहीं भारतीय जनता पार्टी के महिला मोर्चा की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती वनथी श्रीनिवासन ने कहा कि बोधगया के विहारों पर किया गया यह कार्य एक बहुत महत्वपूर्ण प्रयास है। उन्होंने इस कार्य में सहयोग देने के लिए मूर्ति ट्रस्ट की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि इस तरह की पुस्तकों से भारतीय संस्कृति को बड़े करीब से समझने का अवसर मिलता है। गौरतलब है कि इस पुस्तक में बोधगया के 41 बौद्ध विहारों का लेखन एवं फोटोग्राफी के माध्यम से दस्तावेजीकरण डॉक्टर कायनात काजी द्वारा एवं संपादन जनसंचार विभाग के शिक्षक डॉ दिग्विजय सिंह राठौर द्वारा किया गया है। भारत में संस्कृति के संरक्षण के सशक्त हस्ताक्षर कार्यक्रम के विशेष अतिथि पद्म श्री के के मोहम्मद ने कहा कि एक शानदार फोटोग्राफर होने के साथ–साथ लेखक होने पर भारतीय संस्कृति का और सुंदर तरीके से प्रस्तुतीकरण किया जा सकता है। यह पुस्तक इसकी बेहतरीन कला का उदाहरण है। उन्होंने कहा कि बोध गया के विहार काफी टेबल पुस्तक एक संग्रहणीय ग्रंथ है। पुस्तक की लेखिका एवं फोटोग्राफर डॉक्टर कायनात काजी ने कहा कि बोधगया की बिहार दक्षिण एशियाई देशों की विविध संस्कृति के वाहक है। उन्होंने इस कार्य के लिए सहयोग करने पर मूर्ति ट्रस्ट का आभार व्यक्त किया। महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. रमा ने अतिथियों का स्वागत किया। पुस्तक के संपादक एवं वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग के शिक्षक डॉ दिग्विजय सिंह राठौर ने धन्यवाद ज्ञापन किया।संचालन डॉ. प्रभांशु ओझा ने किया। इस अवसर पर बोगनविलिया आर्ट फाऊंडेशन की फाउंडर आलिया रफत शादमा, आदित्य प्रकाश जी, प्रोफेसर सुभाजीत,शाल्वी दत्ता, डॉ स्वाति चौधरी समेत महाविद्यालय के शिक्षक एवं विद्यार्थी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। जनसंचार विभाग के शिक्षक डॉ दिग्विजय सिंह राठौर की उपलब्धि के लिए विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर वंदना सिंह, जनसंचार विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर मनोज मिश्र, डॉ सुनील कुमार, डॉ चंदन सिंह समेत अन्य शिक्षकों ने बधाई दी है।

500 वर्ष पहले बाबर के सिपहसालार ने अयोध्या, संभल में जो घिनौना कार्य किया वही हो रहा बांग्लादेश में योगी आदित्य नाथ

(डॉक्टर अजय तिवारी
जिला संवाददाता)

अयोध्या। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रामायण मेला समिति द्वारा आयोजित 43वें रामायण मेला का गुरुवार को रामकथा पार्क में शुभारंभ किया।इस दौरान सीएम ने पुस्तिका का विमोचन भी किया। सीएम ने रामायण मेला समिति को आश्वस्त किया कि अयोध्या में कुछ नया लेकर आइए, सरकार सदा आपके साथ है।उन्होंने रामायण पर शोध की आवश्यकता पर बल दियाइस मौके पर उन्होंने कहा कि अयोध्या धाम को पुरातन गौरव प्राप्त हो।इसके लिए सरकार प्रतिदिन कार्य कर रही है।मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि 500 वर्ष पहले बाबर के सिपहसालार ने अयोध्या, संभल में जो कृत्य किया था और जो काम आज बांग्लादेश में हो रहा है, तीनों की प्रकृति–डीएनए एक जैसा है। कोई मानता है कि यह बांग्लादेश में हो रहा है तो गलतफहमी में न रहे। यहां भी बांटने वाले तत्व पहले से खड़े हैं। वे सामाजिक ताने–बाने को छिन्न– भिन्न और सामाजिक एकता को तोड़कर, आपको बांटकर फिर काटने व कटवाने का इंतजाम भी कर रहे हैं। बांटने वाले बहुत सारे लोग ऐसे हैं, जिन्होंने दुनिया के कई देशों में प्रॉपर्टी खरीद रखी है। यहां संकट आएगा तो वे वहां भाग जाएंगे और मरने वाले मरते रहेंगे, लेकिन हम प्रभु के आदर्शों से प्रेरणा लेकर उसके अनुरूप खुद को तैयार करते हुए पीएम मोदी के श्एक भारत–श्रेष्ठ भारतश के निर्माण में योगदान देंगे।मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि भगवान राम ने पूरे भारत व समाज को जोड़ने का कार्य किया। जोड़ने के कार्य को हमने महत्व दिया होता और सामाजिक विद्वेष– समाज को तोड़ने की दुश्मनों की रणनीति को सफल नहीं होने देते तो देश कभी गुलाम नहीं होता और न ही तीर्थ अपवित्र होते। मुट्ठी भर आक्रांताओं को भारत के वीर योद्धा रौंद डालते, लेकिन आपसी एकता में बाधा पैदा करने वाले सफल रहे। उन्हीं के जींस आज भी जाति के नाम पर राजनीति करने वाले सामाजिक ताने–बाने को छिन्न–भिन्न करने का प्रयास कर रहे हैं। सीएम योगी ने कहा कि अयोध्या ने हजारों वर्षों से विश्व कल्याण की मानवता का मार्ग प्रशस्त किया है। अयोध्या दुनिया के लिए मार्गदर्शक है। यहां कोई युद्ध करने का दुस्साहस नहीं कर सकता। राग–द्वेष से मुक्त अयोध्या दुनिया में चल रहे द्वंद्व के समाधान की भूमि है। प्रभु कृपा से अयोध्या ध ाम आज आध्यात्मिक व सांस्कृतिक रूप से वैश्विक नगरी के रूप में फिर से नई पहचान के साथ आगे बढ़ रहा है। जनवरी में पीएम नरेंद्र मोदी के करकमलों से 500 वर्षों के लंबे अंतराल के बाद प्रभु फिर से राम मंदिर में विराजमान हुए हैं। 22 जनवरी को आयोजन अयोध्या में था, लेकिन उत्सव पूरा देश–दुनिया में मनाया जा रहा था।उन्होंने कहा कि श्रीराम के प्रति भारत का भाव क्या है, इसका अनुभव करना हो तो गांव–गांव में संत तुलसीदास द्वारा प्रारंभ किए गए रामलीलाओं का आयोजन देखिए। प्रभु राम के प्रति सनातन धर्मावलंबियों के भाव का अनुभव करना है तो 1990 के दशक को याद कीजिए, जब हर घर में टीवी नहीं थी, लेकिन लोग सूदूर जाकर दूरदर्शन पर रामायण सीरियल देखते थे।यह प्रभु राम के प्रति भारत की सनातन श्रद्धा का प्रतीक है।उन्होंने कहा कि जिसके मन में श्रीराम व मां जानकी के प्रति श्रद्धा व समर्पण का भाव नहीं हैं, उसे कट्टर दुश्मन की तरह त्याग देना चाहिए। 1990 में रामभक्तों ने भी नारा लगाया था, जो राम का नहीं–वो किसी काम का नहीं।लोहिया जी कहते थे–जब तक श्रीराम, श्रीकृष्ण व भगवान शिव के प्रति आस्था रहेगी, भारत का कोई बालबांका नहीं कर पाएगा।इस अवसर पर मणिराम दास छावनी के महंत व आयोजन समिति के वरिष्ठ उपाध यक्ष महंत कमलनयन दास जी महाराज, जगद्गुरु स्वामी रामदिनेशाचार्य जी महाराज,

जगद्गुरु स्वामी राघवाचार्य जी महाराज, बड़े भक्तमाल मंदिर के महंत अवधेश कुमार दास जी महाराज, पूर्व सांसद डॉ. रामविलास वेदांती, सुनीता शास्त्री, कैबिनेट मंत्री सूर्य प्रताप शाही, विधायक वेदप्रकाश गुप्त, कमलेश सिंह, नागा रामलखन दास, संयोजक आशीष मिश्र आदि मौजूद रहे।संचालन डॉ. जनार्दन उपाध्याय ने किया।

राष्ट्रीय कायस्थ महाकुम्भ समागम 8 दिसम्बर को लखनऊ में

ब्यूरो प्रमुख

विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

में जौनपुर, के पी ट्रस्ट प्रयागराज (कायस्थ पाठशाल प्रयागराज) द्वारा 8 दिसम्बर रविवार को लखनऊ में आयोजित राष्ट्रीय कायस्थ महाकुम्भ समागम पर्वतीय महापरिषद मंच निकट खाटू श्याम मंदिर गोमती तट के किनारे होने वाले कायस्थ महाकुम्भ समागम में शामिल होने के लिए आज जौनपुर में राष्ट्रीय संगत पंगत जौनपुर के संरक्षक राकेश श्रीवास्तव प्रशासनिक अधिकारी के आवास पर राष्ट्रीय संगत पंगत, कायस्थ महासभा, के पी ट्रस्ट प्रयागराज के सदस्यों, श्री चित्रगुप्त पूजन महासमिति के जिलाध्यक्ष जौनपुर, कायस्थ समाज जौनपुर , कायस्थ संगठनो की संयुक बैठक में लखनऊ चलने पर चर्चा हुई। कायस्थ महाकुम्भ समागम में मुख्य अतिथि के रूप में योगी आदित्यनाथ जी मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश विशिष्ट अतिथि आर के सिन्हा सांसद संस्थापक राष्ट्रीय संगत पंगत, पर्यावरण वन मंत्री डॉ अरुण सक्सेना पूर्व मंत्री सिद्धार्थ नाथ सिंह,के पी ट्रस्ट प्रयागराज के अध्यक्ष डॉ सुशील सिन्हा , उपाध्यक्ष डॉ आनन्द प्रकाश साहित देशभर के कायस्थ संगठनों के राष्ट्रीय अध्यक्ष, मंत्री , सांसद, विधायक, महान विभूतियों का मार्गदर्शन प्राप्त होगा। राष्ट्रीय संगत पंगत के संगठन मंत्री राजेश श्रीवास्तव बच्चा भईया एडवोकेट ने कहा कि यह समागम देश में एक मिशाल कायम करने जा रही हैं जौनपुर से भी सैकड़ों कायस्थ बंधु 8 दिसम्बर को सुबह अपने निजी वाहनों और बस से लखनऊ जाएंगे। लखनऊ में एक होटल से राष्ट्रीय संगत पंगत जागरण रथयात्रा आर के सिन्हा बाबूजी सांसद के नेतृत्व में निकलेगी जो कार्यक्रम में जाएगी। जिला अध्यक्ष मनोज श्रीवास्तव एडवोकेट ने कहा कि कायस्थ समाज जौनपुर के लोग सुबह 7 बजे सिटी स्टेशन पहुंचकर साथ चले जो लोग भी चलना चाहते है अपना नाम नोट करवा दे। वरिष्ठ नेता गिरिजेश श्रीवास्तव चंद्रमोहन श्रीवास्तव ने कहा कि कायस्थ समाज को एकजुटता दिखाने का समय आ गया है। राष्ट्रीय प्रवक्ता विश्व प्रकाश श्रीवास्तव ने सभी चित्रगुप्त भक्तों से ज्यादा से ज्यादा लोगों को कार्यक्रम में भाग लेने की अपील किया। जौनपुर टीम का नेतृत्व कल्याण समिति एवं कायस्थ महासभा जौनपुर के पूर्व अध्यक्ष दयाल सरन श्रीवास्तव, राकेश श्रीवास्तव साधु जी करेंगे। बैठक में दीपक श्रीवास्तव पत्रकार, अजय वर्मा , संतोष श्रीवास्तव विनय श्रीवास्तव, डॉ संजय श्रीवास्तव गौरव श्रीवास्तव अमर श्रीवास्तव राकेश श्रीवास्तव आर पी श्रीवास्तव संदीप श्रीवास्तव पत्रकार संतोष निगम दिनेश श्रीवास्तव, अनीस श्रीवास्तव अनिल श्रीवास्तव आदि चित्रांश बंधु मौजूद रहे।उक्त जानकारी कार्यक्रम संयोजक राजेश श्रीवास्तव बच्चा भईया ने दिया।

संविधान के कुशल शिल्पी व सामाजिक न्याय के प्रणेता थे अंबेडकर : रामभजन चौबे

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय

बेलसर–गोंडा। भारतीय संविधान के निर्माता बाबा साहब डा. भीमराव अंबेडकर के परिनिर्वाण दिवस पर शुक्रवार को विधानसभा क्षेत्र तरबगंज के सपा जनसंपर्क कार्यालय बेलसर में संगोष्ठी का आयोजन कर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए सपा के वरिष्ठ नेता व पूर्व विधानसभा प्रत्याशी रामभजन चौबे ने कहा कि बाबा साहब

अंबेडकर भारतीय संविधान के कुशल शिल्पी और सामाजिक न्याय के प्रणेता थे। उन्होंने संविधान को स्वतंत्रता समानता व सामाजिक सौहार्द का जो स्वरूप दिया उससे दुनिया में भारतीय लोकतंत्र अबाध रूप से आगे बढ़ रहा है। बाबा साहब को श्रद्धांजलि देते युवा सपा नेता मनोज चौबे ने कहा कि बाबा साहब ने संविधान के मसौदा समिति के अध्यक्ष रूप में समाज के वंचित, दलित व पिछड़े वर्ग को समाज में विधिक रूप से मान सम्मान के साथ शासन सत्ता में भागीदारी सुनिश्चित कराई। मध्य प्रदेश के महू में 1891 में जन्में अंबेडकर का परिनिर्वाण 6 दिसंबर 1956 को नई दिल्ली में हुआ। संगोष्ठी में उपस्थित लोगों ने अंबेडकर के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी। श्रद्धांजलि देने वालों में राम सतेंसर, ओमप्रकाश पाण्डेय, बबलू ओमबाबू यादव, शिवशंकर तिवारी, राकेश सिंह, रोहित चौबे, अंकित पाण्डेय, दिलीप पाण्डेय, पिंटू सिंह, पवन श्रीवास्तव, फरीद आदि शामिल रहे ।

अल्पसंख्यक छात्रों के छात्रवृत्ति आवेदन 15 जनवरी तक करे आवेदन

हरदोई(अम्बरीष कुमार सक्सेना)

जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी नरेश कुमार ने जनपद की समस्त शिक्षण संस्थाओं के प्राचार्यध्प्रधानाचार्यध्छात्रवृत्ति नोडल अधिकारियों को सूचित किया है, कि अल्पसंख्यक कल्याण विभाग की पूर्वदशम छात्रवृत्ति व दशमोत्तर छात्रवृत्तिध्शुल्क प्रतिपूर्ति योजनान्तर्गत अध्ययनरत छात्रध्छात्राओं द्वितीय चरण हेतु तिथि निर्धारित की गयी है। जिसमें छात्र छात्राओं द्वारा छात्रवृत्ति पोर्टल पर आनलाइन आवेदन 15 जनवरी, 2025 तक किया जायेगा। उन्होंने बताया कि वित्तीय वर्ष 2024–25 में पूर्व दशम छात्रवृत्ति एवं दशमोत्तर छात्रवृत्तिध्शुल्क प्रतिपूर्ति योजना के अंतर्गत सभी पात्र छात्रध्छात्राएं निर्धारित समय के भीतर ऑनलाइन आवेदन करें। सभी पात्र छात्रों को आवेदन करना चाहिए। कोई भी पात्र विद्यार्थी आवेदन से वंचित न रहे। वित्तीय वर्ष 2024–25 में पूर्व–10वीं छात्रवृत्ति योजना एवं दशमोत्तर छात्रवृत्तिध्शुल्क प्रतिपूर्ति योजनान्तर्गत ओ०बी०सी० के समस्त पात्र छात्रध्छात्राओं को छात्रवृत्तिध्शुल्क प्रतिपूर्ति की धनराशि उपलब्ध बजट की सीमा तक आधार पेमेन्ट ब्रिज प्रणाली के माध्यम से छात्र के आधार सीडेड बचत बैंक खाते में सीधे अन्तरित की जायेगी। छात्रों के बैंक शाखा के माध्यम से बैंक खाते में आधार नम्बर सीडिंग व एन०पी०सी०आई० से मैपिंग कराना अनिवार्य होगा (संबंधित शिक्षण संस्थाएं आधार नम्बर सीडिंग व एन०पी०सी०आई० से मैपिंग की सूचना अपने विद्यालय के सूचना पट पर अवश्य चस्पा करें)। उन्होंने बताया कि 18 जनवरी 2025 तक शिक्षण संस्थाओं द्वारा ऑनलाइन आवेदन प्राप्त करना, सत्यापित एवं अग्रसारित किया जाना है। छात्रध्छात्राओं द्वारा फाइनल सबमिट आवेदनों को अन्तिम तिथि की प्रतीक्षा किये बिना आवेदनो को अग्रसारित करना सुनिश्चित करे। निर्धारित तिथि के पश्चात यदि छात्र–छात्राए ऑनलाइन आवेदन पत्र भरने से वंचित होते है तो इसकी सम्पूर्ण उत्तरदायित्व सम्बन्धित शिक्षण संस्थाओं के छात्रवृत्ति नोडल अधिकारियों का होगा।

मुख्यमंत्री योगी ने दी शुभकामनाएं, बोले – फडणवीस के नेतृत्व में प्रगति और समृद्धिहासिल करेगा महाराष्ट्र

लखनऊ, संवाददाता। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने देवेंद्र फडणवीस को महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री और एकनाथ शिंदे तथा अजीत पवार को उप मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने पर बधाई दी। योगी बृहस्पतिवार को महाराष्ट्र सरकार के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होने मुंबई गए थे। उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा कि देवेंद्र फडणवीस को महाराष्ट्र राज्य के मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने पर बधाई एवं शुभकामनाएं। पूर्ण विश्वास है

कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के यशस्वी मार्गदर्शन व आपके (फडणवीस) कुशल नेतृत्व में विकसित महाराष्ट्र–सुरक्षित महाराष्ट्र की संकल्पना की सिद्धि के साथ ही राज्य सुशासन के सुपथ पर अविराम बढ़ते हुए प्रगति और समृद्धि के नवीन मानक स्थापित करेगा। बता दें कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने महाराष्ट्र चुनाव में ताबड़तोड़ रैलियां की थी। उन्होंने महाराष्ट्र में चार दिन चुनाव प्रचार किया था, जिसमें 24 प्रत्याशियों के पक्ष में वोट देने की अपील की थी। इसमें से 22 सीटों पर महायुति गठबंधन के प्रत्याशियों को जीत हासिल हुई है।

फुलाते समय फटा गुब्बारा, गले में जा फंसा... सांसों के लिए तड़पकर मासूम की मौत, बिलख उठे घरवाले

लखनऊ, संवाददाता। राजधानी लखनऊ में बृहस्पतिवार को गुब्बारा फूटकर मासूम के गले में फंस गया। इससे उसे सांस लेने में तकलीफ हुई। आनन फानन में परिजन बच्चे को लेकर पहले निजी अस्पताल गए। हालत गंभीर देख निजी अस्पताल ने उसे ट्रॉमा रेफर किया। वहां पहुंचने से पहले बच्चे की मौत हो गई। ट्रॉमा में जांच पड़ताल बाद बच्चे को मृत घोषित कर दिया। इस दर्दनाक हादसे बाद परिवार में हाहाकार मचा है। ठाकुरगंज दौलतगंज के काशी विहार फूलमती मंदिर के पास रहने वाले कैटर्स विनय गुप्ता का ढाई साल का बेटा शिवांश बुधवार दोपहर घर के बाहर खेल रहा था। बच्चे को परिजनों ने गुब्बारा पकड़ा दिया था। जिसे वह मुंह से फूला रहा था। फुलाते वक्त गुब्बारा फटकर गले में जाकर फंस गया।

गले के अंदर फंसा गुब्बारा

इससे बच्चे को सांस लेने में तकलीफ होने लगी। कुछ ही देर में वह इधर–उधर दौड़ने बाद गिर गया और उसकी आंखें पलट गई। यह देख परिजन दौड़े और उसे उठाकर घर के अंदर लाए। गले के अंदर फंसे गुब्बारे को निकालने की कोशिश किया, मगर कामयाब नहीं हुए।

विनय का एक और चार माह का बेटा है

बच्चे को लेकर पहले नजदीकी निजी अस्पताल ले गए। वहां पर डॉक्टरों ने हाथ खड़े कर दिए। परिजन बच्चे को लेकर ट्रॉमा गए थे मगर वहां पर जांच बाद डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। घटना बाद से परिवार में कोहराम मच गया।

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय हरदोई में आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग पर प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न

हरदोई (अम्बरीष कुमार सक्सेना) पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय हरदोई में शुक्रवार को कक्षा 8 के विद्यार्थियों के लिए राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान की फैकल्टी द्वारा आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग पर एक सप्ताह का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के दौरान, छात्रों को आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के मूल सिद्धांतों और उनके व्यावहारिक अनुप्रयोगों के बारे में जानकारी दी गई। छात्रों को राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान के अधिकृत केंद्र पर ले जाकर भी प्रशिक्षित किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन पर, राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान द्वारा छात्रों को प्रशिक्षण पूर्ण होने का प्रमाण पत्र प्रदान किया जाएगा।

प्राचार्य मोहम्मद राशिद ने बताया कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के मूल सिद्धांतों और उनके व्यावहारिक अनुप्रयोगों के बारे में जानकारी प्रदान करना है इससे छात्रों को आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के सिद्धांतों को व्यावहारिक रूप से लागू करने का अवसर मिलेगा, जिससे उनकी विचारशीलता और समस्या–समाधान कौशल में सुधार होगा तथा इस क्षेत्र में रुचि और ज्ञान प्रदान करने से उन्हें नई प्रौद्योगिकियों के प्रति आकर्षित किया जा सकता है। आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के क्षेत्र में प्रशिक्षण प्राप्त करने से छात्रों को भविष्य के करियर अवसरों में वृद्धि हो सकती है। इसके अलावा प्रशिक्षित छात्र सामाजिक और आर्थिक विकास में योगदान कर सकते है।

वार्षिकोत्सव बच्चों की प्रतिभाएँ निखारने का सर्वोत्तम माध्यम है : बाल मुकुन्द प्रसाद

हरदोई(अम्बरीष कुमार सक्सेना)

रफी अहमद किदवाई इण्टर कालेज का तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव का उदघाटन मुख्य अतिथि जिला विद्यालय निरीक्षक बाल मुकुन्द प्रसाद एवं उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता कर रहे भारत सरकार के पूर्व सलाहकार एस० एन० अग्निहोत्री ने माँ सरस्वती के चित्र पर पुष्प अर्पित करके किया। इस मौके पर उन्होंने कबड्ड्डी प्रतियोगिता के खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त किया। मुख्य अतिथि श्री प्रसाद ने कहा वार्षिकोत्सव बच्चों की प्रतिभाएँ निखारने का सर्वोत्तम माध्यम है पढ़ाई के साथ–साथ खेलकूद और बच्चों में गुणों को विकसित करने में ऐसे कार्यकम अहम भूमिका निभाते है। उन्होंने कहा कि जिले के नामी गिरामी विद्यालयों में रफी अहमद का नाम सबसे ऊपर रहता है। अनुशासन व पढाई के लिए भी इस कालेज की अलग पहचान बनी है। अध्यक्षता कर रहे भारत सरकार के पूर्व सलाहकार श्री अग्निहोत्री ने कहा जब बच्चों में परिश्रम लगन व दृढ़ निश्चय होगा तभी सफलता कदम चूमेगी। बच्चों में शिक्षा के साथ–साथ अन्य साहित्यिक व खेलकूद की प्रतिभाएं विकसित की जानी चाहिए तब इनमे से ही गोपाल दास नीरज, विक्रम साराभाई, विराट कोहली, ए० पी० जे० अब्दुल कलाम जैसे लोग तैयार हो सकेंगे। इससे पहले अतिथियों के आगमन पर स्काउट के बच्चे बैड बजाते हुए उन्हें मंच तक लाये। भवन निर्माण समिति के मुख्य संयोजक अरूणेश वाजपेयी ने स्वागत करते हुये बताया कि विद्यालय के वार्षिकोत्सव के लिये वेष भूषा आदि सभी व्यय विद्यालय परिवार करता है तथा बच्चों के अभिभावकों पर कोई व्यय भार नहीं डाला जाता है। प्रतिभाग करने वाले बच्चों के लिए भोजन आदि की व्यवस्था भी विद्यालय द्वारा की जाती है। विद्यालय के बच्चों द्वारा माँ सरस्वती वदना एवं स्वागत गीत प्रस्तुत

किया गया। प्रबन्धक सुयश वाजपेयी और प्रधानाचार्य डा० अमित कुमार वर्मा ने अतिथियों को मार्ल्यापण किया। संचालन डा० देश दीपक शुक्ला और आभार प्रदर्शन प्रबन्ध समिति के उपाध्यक्ष नरेश चन्द्र शुक्ला ने किया इस मौके पर शिक्षक संघ के पदाधिकारी, प्रबन्ध समिति के सदस्यों के अलावा विभिन्न विद्यालयों के प्रधानाचार्य व शिक्षक मौजूद रहे। कबडडी प्रतियोगिता के फाइनल में ए और बी टीम में काफी उठा पटक के बाद बी टीम को पटकनी देकर ए टीम ने बाजी मार ली। ए टीम के कप्तान सौरभ यादव ने 29 अंक पाकर विजय प्राप्त की जब कि उप विजेता बी टीम के कप्तान ऋषभ सिंह को मात्र 28 अंक ही मिले। कबडडी प्रतियोगिता में उमा शंकर तिवारी, संजय कनौजिया, संतोष शर्मा, रावेन्द्र कुमार, सुभाष चन्द्र विद्या सागर, दीपक दुवे एवं देवेन्द्र मोहन सिंह ने स्कोरिंग किया।

संगठन चुनाव के लिए भाजपा ने बनाए 36 पर्यवेक्षक, रमापति त्रिपाठी लखनऊ जिला एवं महानगर तथा उन्नाव देखेंगे

लखनऊ, संवाददाता। भाजपा ने संगठन चुनाव के लिए 36 पर्यवेक्षकों के नाम बुधवार को घोषित कर दिए। प्रदेश चुनाव अधिकारी डॉ. महेंद्रनाथ पांडेय ने नामों की घोषणा की है। उन्होंने बताया कि पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ. रमापति राम त्रिपाठी को लखनऊ जिला एवं महानगर तथा उन्नाव का पर्यवेक्षक बनाया गया है। इसी तरह मंत्री सुरेश कुमार खन्ना को गाजियाबाद महानगर, नोएडा महानगर, गौतमबुद्धनगर तथा बुलंदशहर का पर्यवेक्षक बनाया गया है। इसी तरह मंत्री सूर्य प्रताप शाही को आगरा जिला एवं महानगर, मथुरा जिला एवं मथुरा महानगर, स्वतंत्र देव सिंह को गोरखपुर जिला एवं महानगर व महराजगंज, धर्मपाल सिंह को मेरठ जिला एवं महानगर व बागपत, नरेंद्र कश्यप को बरेली एवं महानगर व आंवला, सोमेंद्र तोमर को बलरामपुर व श्रावस्ती, जसवंत सैनी को अमेठी, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, प्रदेश उपाध्यक्ष पंकज सिंह को अंबेडकरनगर, अयोध्या जिला एवं महानगर, संतोष सिंह को मुरादाबाद जिला एवं महानगर व रामपुर, सुनीता दयाल को मैनपुरी, फिरोजाबाद जिला एवं महानगर का पर्यवेक्षक बनाया गया है। प्रदेश महामंत्री गोविंद नारायण शुक्ला को मिर्जापुर, भदोही व सोनभद्र, अमर पाल मौर्य को जालौन, चित्रकूट, बांदा, हमीरपुर, अनूप गुप्ता को प्रयागराज महानगर, गंगापार, यमुनापार एवं कौशांबी, प्रियंका रावत को फतेहपुर व महोबा, संजय राय को बाराबंकी व रायबरेली, सुभाष यदुवंश को लखीमपुर, सीतापुर, हरदोई, रामप्रताप सिंह चौहान को झांसी जिला एवं महानगर व ललितपुर, प्रदेश मंत्री शंकर गिरि को मुजफ्फरनगर व बिजनौर की जिम्मेदारी दी गई है। प्रदेश कोषाध्यक्ष मनीष कपूर को हापुड़ व गाजियाबाद, प्रदेश अध्यक्ष अनुसूचित मोर्चा रामचंद्र कनौजिया को औरैया व इटावा, राष्ट्रीय परिषद सदस्य प्रभा शंकर पांडेय को सहारनपुर जिला एवं महानगर, डॉ. एमपी सिंह को शाहजहांपुर जिला एवं महानगर व पीलीभीत, विनोद पांडेय को अलीगढ़ जिला एवं महानगर व हाथरस, शेषनाथ आचार्य को बहराइच, गोंडा, राज्यसभा सदस्य दर्शना सिंह को संभल व अमरोहा, चौधरी तेजवीर सिंह को सिद्धार्थनगर व संतकबीरनगर, पूर्व प्रदेश उपाध्यक्ष राकेश त्रिवेदी को शामली, अक्षयवर लाल गौंड को लालगंज, आजमगढ़, मऊ का पर्यवेक्षक नियुक्त किया गया है। पूर्व प्रदेश संगठन मंत्री जय प्रकाश चतुर्वेदी को कानपुर उत्तर, दक्षिण एवं ग्रामीण, पूर्व प्रदेश महामंत्री विंध्यवासिनी कुमार को कानपुर देहात, फर्रुखाबाद, महोबा, अश्वनी त्यागी को जौनपुर, मछलीशहर, गाजीपुर, पूर्व सांसद सुब्रत पाठक को वाराणसी महानगर एवं जिला, चंदौली, पुष्पेंद्र सिंह चंदेल को बदायूं कासगंज, एटा, लल्लू सिंह को कुशीनगर, देवरिया, बलिया, पूर्व विधायक सुरेंद्र नारायण को बस्ती जिला का पर्यवेक्षक नियुक्त किया गया।

बीए, बीएससी, बीकॉम में अब केवल दो घंटे की परीक्षा, पांच की जगह होंगे चार प्रश्न

लखनऊ, संवाददाता। लखनऊ विश्वविद्यालय से संबद्ध सभी जिलों लखनऊ, हरदोई, सीतापुर, रायबरेली और लखीमपुर खीरी के कॉलेजों में स्नातक विषम सेमेस्टर के विद्यार्थियों की परीक्षाएं तीन की जगह अब दो घंटे में ही कराई जाएंगी। इसमें बीए, बीएससी और बीकॉम के विद्यार्थी शामिल होंगे। कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय की मौजूदगी में हुई परीक्षा समिति की बैठक में यह अहम निर्णय लिया गया। लविवि के मंथन सभागार में हुई परीक्षा समिति की बैठक में स्नातक स्तर पर 75 अंकों के प्रश्नपत्र को दो भागों में विभाजित करने पर भी सहमति बनी। पहले भाग में दो प्रश्न होंगे, इसमें से विद्यार्थी को कोई एक प्रश्न करना होगा। इसके लिए 15 अंक निर्धारित किए गए हैं। इसी तरह से दूसरे भाग में कुल आठ प्रश्न होंगे, जिसमें से कोई भी तीन प्रश्न करने होंगे। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का होगा। इससे पहले विवि में विषम सेमेस्टर की परीक्षा के लिए तीन घंटे की अवधि तय थी। इसमें प्रश्नपत्र में 10 प्रश्न दिए जाते थे जिसमें से कोई पांच करने होते थे। विवि में 17 दिसंबर से विषम सेमेस्टर की परीक्षाएं प्रस्तावित हैं। वर्तमान में परीक्षा फॉर्म भरे जाने की प्रक्रिया चल रही है। जानकारी के मुताबिक, अब तक तीन लाख से अधिक विद्यार्थियों ने परीक्षा फॉर्म भरने की प्रक्रिया को पूरा कर लिया है। तीसरे और पांचवें सेमेस्टर के लिए परीक्षा फॉर्म भरने की अंतिम तिथि सात दिसंबर तय है। जबकि पहले सेमेस्टर के विद्यार्थियों के लिए यह 10 दिसंबर है।

विधि, बीएड व पीजी में तीन घंटे की ही होगी परीक्षा

लविवि के प्रवक्ता दुर्गेश श्रीवास्तव ने बताया कि परीक्षा समिति की बैठक में बीए, बीएससी, बीकॉम में परीक्षा के लिए अब तीन घंटे की जगह केवल दो घंटे की अवधि सुनिश्चित की गई है। वहीं एलएलबी, बीएड और परास्नातक की परीक्षाएं तीन घंटे में ही कराने पर सहमति बनी।

ताकि बेपटरी न हो सत्र, इसलिए घटाया समय

परीक्षा अवधि घटाने की जो सबसे बड़ी वजह मानी जा रही है, वह समर्थ पोर्टल में अव्यवस्थाओं के चलते होने वाली देरी है। पहले शासन और राजभवन से सख्त निर्देश थे कि वर्तमान सत्र में परीक्षाएं इसी माध्यम से कराई जाएंगी। लेकिन दिसंबर के पहले सप्ताह तक 1.5 लाख विद्यार्थी पोर्टल पर अपना पंजीकरण ही नहीं कर पाए थे। ऐसे में सत्र पिछड़ता देख राजभवन सचिवालय ने वर्तमान सत्र में पुरानी व्यवस्था से परीक्षाएं कराने की छूट दी। इसके बावजूद काफी देर हो चुकी है। परीक्षाएं समय से शुरू तो हो जाएंगी, समाप्त होने में संशय है। इसी वजह से यह निर्णय लिया गया है।

मुख्य सेविका के 2567 पदों पर भर्ती के लिए 8337 अभ्यर्थी शॉर्ट लिस्ट, अभिलेख परीक्षण का कार्यक्रम जारी

लखनऊ, संवाददाता। उत्तर प्रदेश में बाल विकास एवं पुष्टाहार विभाग में मुख्य सेविका के 2567

पदों पर चल रही भर्ती के लिए 8337 अभ्यर्थी शॉर्ट लिस्ट किए गए हैं। इन अभ्यर्थियों का अभिलेख परीक्षण 17 दिसंबर से 13 फरवरी के बीच होगा। अधीनस्थ सेवा चयन आयोग ने अभिलेख परीक्षण का तिथिवार विस्तृत कार्यक्रम जारी कर दिया है। आयोग की ओर से मुख्य सेविका के 2693 पदों पर चयन की प्रक्रिया शुरू की गई थी। किंतु विभाग के कर्मचारी इस मामले में कोर्ट चले गए थे। हाईकोर्ट के निर्देश पर 2693 में से 126 पदों को खाली रखते हुए 2567 पदों पर भर्ती की प्रक्रिया तेज की गई है। आयोग के सचिव अवनीश सक्सेना ने बताया कि दो पालियों में 17 दिसंबर से 13 फरवरी के बीच आयोग के लखनऊ कार्यालय में अभिलेख परीक्षण होगा। इसके लिए आयोग डॉक्यूमेंट वेरिफिकेशन लेटर जारी करेगा। इसे आयोग की वेबसाइट से डाउनलोड करना होगा। अर्ह अभ्यर्थी सभी आवश्यक दस्तावेज, आरक्षण व आयु में छूट के लिए प्रमाण पत्र, दो फोटो आदि के साथ निर्धारित तिथि व समय पर उपस्थित हों। उन्होंने यह भी कहा है कि किसी कारण से कोई अभ्यर्थी अर्हता व अभिलेख परीक्षण के लिए अनुपस्थित रहता है तो उसे एक मौका 13 फरवरी को दूसरी पाली में दिया जाएगा। इसके बाद उन्हें कोई अवसर नहीं दिया जाएगा।

सरकारी अस्पतालों में तैनात सुरक्षा गार्ड्स को सेवा समाप्ति का नोटिस

लखनऊ, संवाददाता। यूपी के अयोध्या में सरकारी अस्पतालों में तैनात 160 सुरक्षा गार्ड्स को सेवा समाप्ति का नोटिस दिया गया है। मैन पावर सप्लाई करने वाली आईटी वर्ड सुल्तानपुर ने सुरक्षा गार्ड्स को सेवा समाप्ति का नोटिस दिया है। नौकरी जाने की बात आई तो सुरक्षा गार्ड्स ने जिला अस्पताल में प्रदर्शन किया। सुरक्षा गार्ड्स ने कहा कि जब निकालना ही था तो भर्ती क्यों किया था? उन्होंने कंपनी के खिलाफ नारेबाजी करते हुए हंगामा किया। कंपनी की तरफ से दिए गए नोटिस में हवाला दिया गया है कि सीएमओ ऑफिस से पत्र जारी हुआ है। सरकारी अस्पतालों में सुरक्षा गार्ड्स की तैनाती उत्तर प्रदेश पूर्व सैनिक कल्याण निगम के माध्यम से करने के निर्देश दिए गए हैं।

वैश्यों को ओबीसी में शामिल किए जाने की उम्मीद जगी, पिछड़ा वर्ग आयोग कराएगा आर्थिक–सामाजिक सर्वे

लखनऊ, संवाददाता। उत्तर प्रदेश पिछड़ा वर्ग राज्य आयोग के अध्यक्ष राजेश वर्मा ने वैश्य जाति को अन्य पिछड़ा वर्ग की सूची में शामिल करने के अनुरोध पर सर्वे कराने का फैसला किया है। इस निर्णय के तहत वैश्य जाति के सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक और राजनैतिक स्तर का अध्ययन किया जाएगा। आयोग का शोध दल 9 दिसंबर से 13 दिसंबर तक हरदोई जिले का भ्रमण करेगा। विभिन्न तहसीलों, कस्बों और गांवों में जाकर वैश्य जाति से संबंधित आंकड़े और जानकारी इकट्ठा करेगा। इस शोध दल में शोध अधिकारी कृष्ण कुमार, अपर शोध अधिकारी सत्यप्रकाश सिंह और राधेकृष्ण शामिल हैं।

सर्वे में सहयोग करें

पिछड़ा वर्ग राज्य आयोग के अध्यक्ष ने वैश्य जाति के प्रतिनिधियों और सामाजिक कार्यकर्ताओं से अपील की है कि वे शोध दल को जानकारी उपलब्ध कराएं और सर्वे में सहयोग करें। यह अध्ययन वैश्य जाति की सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक और राजनैतिक स्थिति को समझने और अन्य पिछड़ा वर्ग में शामिल करने के लिए आधार तैयार करने में सहायक होगा।

यूपी के कई जिलों में आठ व नौ दिसंबर को हल्की बारिश के आसार, गिरेगा तापमान

लखनऊ, संवाददाता। नये विकसित हो रहे पश्चिमी विक्षोभ की वजह से 8 व 9 दिसंबर को यूपी के तराई इलाकों में बूंदाबांदी के साथ हल्की बारिश के आसार हैं। प्रदेश में बृहस्पतिवार को भी लगातार दूसरे दिन 25 से 35 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से पछुआ हवा चली। आसमान साफ होने से हवा में रूखापन और दोपहर की सीधी धूप में तपिश महसूस की गई। मौसम विभाग का कहना है कि अगले दो दिन तक फिलहाल मौसम ऐसा ही रहने वाला है। पछुआ के बावजूद दोपहर में हो रही तीखी धूप और गर्मी के सवाल पर आंचलिक मौसम विज्ञान केंद्र लखनऊ के वैज्ञानिक अतुल कुमार सिंह ने बताया कि कोहरा नहीं होने से सुबह से सूरज की तपिश सीधे धरती की सतह तक आ रही है। इससे पछुआ का असर गर्मी घटाने के लिए नाकाफी हो रहा। आने वाले दिनों में पछुआ के जोर से तापमान में 2 से 3 डिग्री तक की गिरावट देखने को मिलेगी और ठंड में इजाफा होगा। हवा की गुणवत्ता में भी सुधार होगा। उरई में सर्वाधिक 30 डिग्री सेल्सियस अधिकतम तापमान रहा। वहीं, वाराणसी में 29.8 डिग्री और अयोध्या में अधिकतम तापमान 29.5 डिग्री सेल्सियस रहा। न्यूनतम तापमान की बात करें तो अयोध्या में सबसे कम 9 डिग्री, नजीबाबाद में 9.5 डिग्री और बरेली में 9.6 डिग्री सेल्सियस तापमान दर्ज किया गया।

नशे में धुत पिकप चालक ने आटो मे मारी टक्कर, आठ स्कूली बच्चे घायल

लखनऊ, संवाददाता। स्कूली बच्चों को लेकर स्कूल जा रहे आटो को पिकप ने पीछे से टक्कर मार दी। टक्कर के बाद आटो आगे खड़ी स्कार्पियो से भिड़ने के बाद पलट गई। लोगों ने आटो सीधी कर घायल बच्चों को निजी अस्पताल पहुंचाया व शराब के नशे मे धुत पिकप चालक को पकड़कर पीटने के बाद पुलिस को सौंप दिया। निगोहां के मस्तीपुर से स्कूली बच्चों को लेकर निगोहां कस्बे में स्थित संत फ्रांसिस कॉलेज जा रहे आटो को पीछे से तेज रफ्तार से आ रहे पिकप डाले ने मोहनलालगंज के भावाखेड़ा के पास टक्कर मार दी जिससे छिटककर आगे खडी स्कार्पियो से जा भिड़ा और पलट गया। आटो सवार देवा (16), स्वामी (13) व महिमा (6) समेत आठ लोग घायल हो गए। गांव के लोगों ने आटो सीधी कर बच्चों को आटो से निकालकर इलाज के लिए निजी अस्पताल ले गए। एसीपी रजनीश वर्मा ने बताया कि आटो में बैठे स्कूली बच्चों व आटो चालक को मामूली चोटें आई हैं जिनका प्राथमिक उपचार कर घर भेज दिया गया है। चालक पिकप समेत पुलिस के कब्जे में है। पिकप चालक शराब के नशे में था।

राख लदे टैंकर में घुसी बाइक, दूल्हे के चचेरे भाई समेत तीन की दर्दनाक मौत, सभी जा रहे थे बरात

लखनऊ, संवाददाता। बरात जा रहे दूल्हे के चचेरे भाई समेत तीन युवक राख लदे टैंकर से टकरा गए। बाइक टैंकर में ही फंस गई। घटना में एक युवक की मौके पर ही मौत हो गई जबकि दो युवकों ने अस्पताल में दम तोड़ दिया। हादसा बुधवार की देर रात रोहनिया सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के पास हुआ है। घटना से परिजनों में कोहराम मचा हुआ है। सलोन थाना क्षेत्र के पूरे खीली मजरे रोहनिया गांव निवासी संग्राम 23 पुत्र सज्जन लाल के चचेरे भाई आकाश की बरात बुधवार की रात पूरे बल्दू गांव जा रही थी।

साध्य हिन्दी दैनिक देश की उपासना

स्वात्वाधिकारी में. प्रभुदयाल प्रकाशन की ओर से श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक द्वारा देश की उपासना प्रेस, उपासना भवन, धर्मसारी, प्रेमापुर, जौनपुर उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक
श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव
मो0 – 7007415808, 9628325542, 9415034002
RNI NO - UPHIN/2022/86937
Email - deshkiupasanadailynews@gmail.com

समाचार–पत्र से संबधित समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जौनपुर न्यायालय होगा।